માસિક

સળંગ અંક - ૫૩ સપ્ટેમ્બર -૨૦૧૧

શ્રી સ્વામિનારાયણ

કિંમત રૂા. ૫-૦૦

જલઝીલણી એકાદશીના શ્રી ગણપતિજીના વરઘોડાના અલૌકિક દર્શન

પ્રકાશક : શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, અમદાવાદ - ૩૮૦૦૦૧

Prafull Kharsani

(૧)ડિટ્રોઈટ મંદિરમાં ઠાકોરજીનો પાટોત્સવ-અભિષેક કરતાં અને આરતી ઉતારતા પ.પૂ. મહારાજશ્રી. (૨) લેસ્ટર મંદિરમાં ઠાકોરજીનો પાટોત્સવ-અભિષેક કરતાં અને આરતી ઉતારતા પ.પૂ. મહારાજશ્રી. (૩) કાલુપુર મંદિરમાં જન્માષ્ઠમી પ્રસંગે ઠાકોરજીને પારણામાં ઝુલાવતા પ.પૂ.લાલજી મહારાજશ્રી સાથે બ્ર.પૂજારી રાજેશ્વરાનંદજી અને સભામાં પ.પૂ.લાલજી મહારાજશ્રી સાથે પૂ.બિંદુરાજાના બન્ને ચિ.ભાણાભાઈતથા પૂ.મહંત સ્વામીની નિશ્રામાં કીર્તનભક્તિ. (૪) કાંકરિયા મંદિરમાં શ્રાવણમાસમાં શિવ પૂજન કરતાં પ.પૂ. મોટા મહારાજશ્રી સાથે કાંકરિયા - કાલુપુરના મહંત સ્વામી. (૫) ઓકલેન્ડના આપણા પ.ભ. ડો.કાન્તીભાઈ પટેલ અને શ્રીમતી રજંનાબેન પટેલની કંપનીને શ્રેષ્ઠ 'વેસ્ટમેક એવોર્ડ'મળ્યો તે પ્રસંગની તસવીર

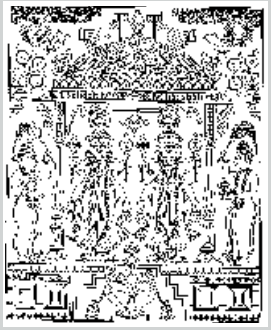

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युझियम
नारणपुरा, अहमदाबाद-३८००१३.
फोन : २७४८९५९७ • फेक्स : २७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com

दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)

श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देश में ५०१-००
विदेश १०,०००-००
प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - ५ अंक : ५३ सितम्बर-२०११

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०२
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०३
०३.	परिपूर्ण परब्रह्म पुरुषोत्तम श्री स्वामिनारायण भगवान की मूर्ति के ध्यान का फल हरिलीला कल्पतरु में से	०४
०४.	आनंद	०८
०५.	श्री स्वामिनारायण मंदिर (आई.एस.एस.ओ.) एटलान्टा में मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव	०९
०६.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	११
०७.	सत्संग बालवाटिका	१३
०८.	भक्ति सुधा	१५
०९.	सत्संग समाचार	१९

अस्मदीयम

अने भगवान ना देहने वेष परिणाम पणुं जणाय ते तो ए भगवान नी योगमाया ए करीने जणाय छे अने तेने विषे जे भगवानना भक्त छे ते मोह नथी पामता ने जे अभक्त छे तेनी मति भ्रमी जाय छे। जेम नटना चरित्रने देखीने जगतना जीवनी मति भ्रमी जाय छे अने नटनी विद्याना जालतलनी मति नथी भ्रमाति, तेम पुरुषोत्तम एवा जे श्री नरनारायणने अनेक देह धरीने नटनी पेठे त्याग करे छे ने ए श्री नरनारायण सर्वे अवतारना कारण छे ने श्री नरनारायणने विषे जे मरण भाव कल्पे छे तेने अनेक देह धरवा पड़े छे ने चोराशीना दुःखोने यमपुरीना दुःख नो तेने पार आवतो नथी अने जे श्री नरनारायणने विषे अजर अमरपणु समजे छे ते कर्म थकी ने चोराशी थकी मुकाई जाय छे। माटे आपना उद्धव संप्रदायना सर्वे सत्संगी, साधु भगवाननी मूर्तियु जे थई गइयुं अने हमणां छे ने आगळ थाशे तेने विषे मरण भाव कोई कल्पशोंमां अने आ वार्ता सौ लखी लेजो।'' (अहमदाबाद व. ४)

इसलिये प्रिय भक्तों अपने इष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायण ने अपने बाहों में भरकर भगवान नरनारायणदेव को श्री नगर में प्रतिष्ठित किया था। जिसका नित्य दर्शन करने के लिये देश-विदेश से जो भक्त नहीं आसकते हैं वे वर्ष में एक बार दर्शन करने अवश्य आवें। उसमें भी फाल्गुन शुक्ल-३ तृतीया को पाटोत्सव का दर्शन करने अवश्य आवें।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(अगस्त-२०११)

२८ जुलाई से ३१ अगस्त तक अमेरिका तथा यु.के. के धर्म प्रवास में पदार्पण । अमेरिका डिट्रोईट मंदिर, शिकागो मंदिर पाटोत्सव, आटलान्टा नूतन मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा, वहाँ से लंडन यु.के. लेस्टर मंदिर पाटोत्सव, स्वीडन मंदिर का २० वाँ पाटोत्सव सम्पन्न करके वहाँ से लंडन से अमेरिका बोस्टन का ५ वाँ पाटोत्सव पारायण तथा आई.एस.एस.ओ. के चेप्टरों में सत्संग प्रचारार्थ विचरण ।

श्री स्वामिनारायण मासिक में प्रसिद्ध करने के लिये लेख, समाचार एवं फोटोग्राफ्स ई-मेईल से भेजने के लिए नया एड्रेस

shreeswaminarayan9@gmail.com

नीचेके महामंदिरोमें नित्य दर्शन के लिये

जेतलपुर : **www.jetalpurdarshan.com**
छपैया : : **www.chhapaiya.com**
महेसाणा : **www.mahesanadarshan.org**
टोरडा : **www.gopallalji.com**

परिपूर्ण परब्रह्म पुरुषोत्तम श्री स्वामिनारायण भगवान की मूर्ति के ध्यान का फल हरिलीला कल्पतरु में से

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

			नीचे के अनुसार शुभ गुण प्राप्त होता है	नीचे के अनुसार पापरुप दोष नष्ट होता है।
१	चरण	शम	अनर्थ करना शब्दादि असत्य पंच विषयों से अन्तःकरण का नियमन	१. लोभ - काम नष्ट होता है। जो क्लेश का स्थान है। नरक प्राप्ति में कारण भूत है, संसृति को देने वाला है
		दम	अनर्थ करने वाले सद्विषयों से बाह्य इन्द्रियों को वापस लाना	
		तप	इन्द्रियदमन	
		शौच	बाह्य तथा आन्तरिक शुद्धि से भगवान की पूजा इत्यादि में योग्यता प्राप्त करना।	२. अधर्म का नाश होता है।
		ज्ञान	आत्मा तथा परमात्मा को तत्वपूर्वक जानना	३. नास्तिकता नष्ट होती है। अज्ञान तथा ठगता नष्ट होती है
		सत्य	हितरुप सत्य वचन।	भय एवं मत्सर नष्ट होते है
२	घुटना	अभय	सत् असत् से भय की निवृत्ति	
		आर्जव	सरलता, मन, वचन, कर्म से एकी भाव	
३	जंघा		स्थैर्य + ऐश्वर्य गुण आता है।	
		स्थैर्य	सत् शास्त्र में बताये गये भागवतधर्म में स्थिरता	
		ऐश्वर्य	अपने धर्म में प्रवर्तन रुप दृढता तथा दूसरे को भी प्रवर्तित कराती है।	व्यभिचार+प्रमाद नष्ट होता है।
४	कटी		अनायस तथा सुखरुप गुण आते है	दुःख तथा शोक नष्ट होता है।
५	जानुं		वैराग्य + मार्दव गुण आता है।	राग - विषयों में आशक्ति नष्ट हो जाती है।
		मार्दव -	साधु जनो को जो वियोग सहन न कर सके।	पारुष्य - कठोरवाणी अथवा साधुजनो को उद्विग्न करने वाला स्वभाव
६	कटि	धैर्य	देशकाल विषम होते हुये भी व्याकुल न होना	चिन्ता+तृष्णा नष्ट होती है।
		तुष्टि	धर्माचरणजन्य आनन्द।	चिन्ता स्मरण से मनका संताप
७	नाभि		निस्पृहपनाका भाव + मंगल गुण आने से बिना कारण भी कार्य हो ऐसी वृथा आकांक्षा को स्पृहा कहते है।	तृष्णा अधिक प्राप्ति की इच्छा
			मंगल - श्रेष्ठ कर्म का आचरण	पाप+स्नेह नष्ट होता है
८	त्रिबली		अक्षयधन का यथार्थ व्यय, पात्र देखकर	पापम् छ प्रकार के पाप
		क्षेम	उदार अन्तःकरण से अपने धर्म में अन्तराय विना रखे व्यवहार करे।	स्नेह भगवान के बिना दूसरे पदार्थों में अपने बंधन में कारणरुप प्रीति
				मद + व्यसन नष्ट होता है
				मद कुल-रुप-वय विद्यादि गुण का समुल्लास
				व्यसनम् आसक्ति स्वरुप कर्म अथवा

निष्फल उद्यम ।

९	उदर		त्याग + निग्रह गुण आता है ।	रसास्वाद + जूआ नष्ट होता है
		त्याग	आत्मा के हित में विरोधी पदार्थो के संग्रह का त्याग	धूत – जूआ
		निग्रह	मायिक विषयों में स्वाभाविक प्रवृत्तिशील इन्द्रियों का तथा अन्तःकरण का शास्त्रोंक्त नियम से निग्रह करना	
१०	करवट	अचापाल्य	भगवान का तथा भगवान के भक्त के दर्शन विना प्रयोजन वाणी का प्रयोग नहीं करना	आशा तथा स्पृहा का नष्ट होना आशा लाभ की प्रतीक्षा स्पृहा विशेष इच्छा
		ऋण रहित होना	देव–ऋषि – पितृ–भूतादिक के ऋण से रहित होने के लिये यथाशास्त्र विधिकरवानी	
११	स्तन		योग तथा ब्रह्मचर्य	
		योग	कल्याण के साधनों का निरंतर अभ्यास	धर्मद्वेश+कलयुग के धर्मका नाश होता है
		ब्रह्मचर्य	आठ प्रकार से	
१२	वक्षस्तळ		१. विषयवासना से विराम, संसृति कराने वाले ग्राम्य सुख से विराम २. यज्ञरुपी गुण आता है, स्वधर्म तप अष्टांगयोग, दान, व्रत तथा भगवान की भक्ति में फलेच्छा रहित केवल भगवान की प्रसन्नता के लिये आचरण करना ।	द्वेष – अपने इच्छित विषयों में विघ्न करने वाले में विरोधका आचरण करना चौर्य – प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष पर द्रव्य का हरण न करना
१३	मणिबन्ध	स्वाध्याय	शास्त्रों का पठन, पाठन, श्रवण जप	मोह + अनृत नष्ट होना
		आस्तिक्यं	शास्त्र, अवतार, परमेश्वर, धाम लोक इत्यादि में आस्तिक बुद्धि ।	मोह विवेक अभाव में विपरीत ज्ञान । अनुत्तम वारंवार असत्य भाषण ।
१४	भुजा		तेज प्रसाद गुण आता है	अहंकार+अविश्वास नष्ट होता है
		तेज	दुर्जनो से पराभव नहीं होता ।	अहंकार – तीन प्रकार के देह में आत्मा में अभिमान पूर्वक सुख दुःख का आरोप करना ।
		प्रसाद	अपने अन्तःकरण का निर्मल भाव ।	अविश्वास गुरु+देवादि वाक्यों में अविश्वास
१५	केहुनी	प्रश्रयः	अपने से बड़े के सामने विनय भाव से वर्तन करना चाहिये	दर्प विषयानुभव निमित्तक हर्ष आलस्य : कर्तव्यदिमूढ
		उद्यम	आलस्य रहित जीवन	
१६	स्कन्ध	अनुशंस्यम्	– क्रोधरहित होना	हिंसा रहित होना ।
		साम्य	अपनी उपमा से दूसरों के सुख दुःख की समानता करना	भेद : जिससे अपने हितैषियों में भी क्लेश का आचरण हो ।
१७	ग्रीवा		ईक्षा+क्रिया गुण आता है ।	अहंता+पैशुन्यरुप दोष नष्ट होता है
		ईक्षा	युक्ति युक्त विवेचन	अहंता – ज्ञानवाले भी मोहनवश मिथ्या०

	क्रिया	सत्क्रियानुष्ठान	अहंकार रखते है
			पैशुन्य - दूसरों के दु:ख को दोष मानकर छिप कर इधर-उधर कहना
१८	कंठ	साम + दान	
	साम	शांत बुद्धि से अन्य में प्रीति उत्पन्न हो ऐसे बोलना चाहिये।	असूया+क्रोधके नाम को प्राप्त
			असूया - दूसरे के गुणों में दोष का आरोप
	दान	न्याय से प्राप्त धन को सत्पात्र में देना	क्रोध - मन का संताप
१९	हड्डी	मौन वृथा प्रलाप से बुद्धिपूर्वक निवृति	निंदा + दम्भ इन दोनो असद्गुणों का नाश होता है।
	उद्धेक	बड़े पुरुष के चरण रज का अभिषेक करने से गुण प्राप्ति होती है और उत्कर्ष होता है।	
२०	ओष्ठ	सत्य सेवन भगवानकी उपासनावाले सत्पुरुषों की अनुवृत्ति करते हुये सेवा करना।	मान - अपने में पूज्य भाव रखना।
			ईर्ष्या - अपने समान किसी अन्य के उत्कर्ष को न सहना।
	अहिंसा	मन वचन कर्म से अपने तथा पराये का घात नहीं करना	
२१	दंत पंक्ति	लज्जा निषेधकिये गये कर्म का आचरण करने में शर्म	अपवाद - अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिये दूसरे पर झूठा आरोप
	तितिक्षा	अपने प्रारब्धके अनुसार प्राप्त रोगादि दु:ख को सहन करना	दुरुक्ति - दूसरे मन में विषमता उत्पन्न करने वाला वचन पीछे से बोलना
२२	नासिका	निर्मानी का भाव - अपने भीतर उत्तम गुण को साधुओं के सामने प्रयोग करना	स्वश्लाघा - अपने मुख से अपना गुण वर्णन करना।
		सत्व संशुद्धि - रज तथा तम से अन्त:करण में विक्षेप न हो	वासना - मायिक भोग विषय की मन में इच्छा।
२३	गंड स्थल	- (कान के आगे + पीछे का भाग)	ममता - दैहिक पदार्थों में अपना पन
		क्षमा - व्यावहारिक या आध्यात्मिक दु:ख उत्पन्न करने वाले क्रोधका अभाव	अक्षमा - विपरीत धर्मवाले में क्षमा न करना
		विपर्यय ईक्षा - ग्राम्य सुख की प्राप्ति के लिये विपरीत प्रवृत्ति करने वाले में दोष दर्शन	
२४	कान	श्रद्धा + दया	अश्रद्धा + नैधृष्यम्
	श्रध्धा	विश्वासपूर्वक एकांतिक धर्म में परम आदर	अश्रद्धा - श्रद्धा से विपरीत
	दया	सभी का आपत्ति में रक्षण करना	नैघृण्यम् - दया के योग्य में निर्दय का भाव
२५	नेत्र कमल		
	शांति	- ज्ञानेन्द्रिय से तथा अन्त:करण से भगवान के स्वरुप में एकात्मभाव	अशान्ति - बगल में कहे हुये से विरुद्ध
	स्मृति	- सच्छास्त्रों में कहे गये वचनों को भगवत् प्रसन्नता के लिये होना चाहिये,	अस्मृति - बगल में कहे हुये से विरुद्ध

			इसे कभी नहीं भूलना	
२६	भृकुटी	मैत्री	स्वाभाविकरुप से जीव मात्र पर दया करना	अमैत्री
		बुद्धि	अपने कल्याण के मार्ग में उपयोगी उपाय करना	अबुद्धि
२७	भाल	गति	स्वयं को उत्तम लोक की प्राप्ति हो ऐसा उपाय करना	अगति - गति से प्रतिकूल
		उपरति	मायिक सुख की आशा से विराम	अनुपरति - उपरती से विरुद्ध धर्मवाला
२८	मस्तक	धृति	१. सुशोभित केश से मनोहर श्रीहरि के मस्तक का चितवन करने वाले भक्त में धृति नामका गुण आता है। २. इन्द्रियों की चपलता को दूर करके शक्ति को एकत्रित करने को धृति कहते हैं	

संप्रदाय का गौरव

ओकलेन्ड (न्युजीलेन्ड) में अपने प.भ. डॉ. कांतिभाई पटेल को एवोर्ड

श्री नरनारायणदेव के निष्ठावान तथा प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. आचार्य महाराजश्री के कृपापात्र डॉ. कांतिभाई पटेल की ''तमाकी हेल्थ केर'' कंपनी को श्रेष्ठ ''वेस्ट मेक एवोर्ड'' मिला है। यह कंपनी ओटारा दक्षिण ओकलेन्ड में करीब ३५ वर्ष से काम कर रही है। इस समय ओकलेन्ड में ३० मेडिकल क्लीनिक कार्यरत है। यह कंपनी न्युजीलेन्ड की सबसे बड़ी प्राईवेट हेल्थ कंपनी है। कंपनी के स्थापन डॉ. कांतिभाई पटेल तथा धर्मपत्नी रंजनाबहन पटेल के मार्गदर्शन में कंपनी आगे बढ रही है। पहले भी इस कंपनी को एवोर्ड मिले हैं। ऐसा गौरव पूर्ण समाचार सुनकर अपने प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. आचार्य महाराजश्री उनकी तथा उनकी कंपनी के उत्तरोत्तर वृद्धि के लिये हार्दिक आशीर्वाद देते है।

श्री नरनारायणदेव धार्मिक शिक्षण विभाग द्वारा आगामी धार्मिक परीक्षा के विषय में जानकारी

श्री नरनारायणदेव धार्मिक शिक्षण विभाग द्वारा शहर तथा परा विस्तार में संचालित बाल मंडल के संचालकों को सूचित किया जाता है कि आगामी परीक्षा ता. १२-१२-२०११ को रविवार को निर्धारित केन्द्रों पर ली जाएगी। प्रत्येक विस्तार के संचालकोंने परीक्षार्थीओं की नामावली तथा बाल विभाग की भाग-१ तथा २ की पुस्तके यहाँ से प्राप्त करनी हैं। बाल सत्संग तथा किशोर सत्संग-२ भाग की परीक्षा ली जाएगी। तो उसकी पुस्तकें भी प्राप्त करने की विनंती है।

संचालक : देवाणी रणछोडभाई श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद

आनंद

- साधु घनश्यामप्रकासदास, जमीयतपुरा (महंत स्वामी माणसा)

सत् चित् आनन्द रुप भगवान का धाम है । ''सुख सुख ज्यां सुखना दरिया, तेमां वसी रह्या वालो वास रे ।'' सभी क्लेश, उद्वेग, अशान्ति इत्यादि से रहित ऐसा शाश्वत प्रभुका धाम है जिसमें प्रभु रहते हुये कहते है कि ''हम जो बोल रहे है वह धाम में रहकर बोल रहे हैं और आप सभी को धाम में बैठे देख भी रहे हैं । लेकिन यह वात आप सभी को समझ में नहीं आयेगी । जब यह समझ में आजायेगा तो आप सभी के काम, क्रोधइत्यादि नष्ट हो जायेगें, इन्हें आप बड़ी सरलता से जीत लेंगे (वचनामृत ग.म. १३) । इस प्रकार प्रभु के बताये मार्ग को छोड़कर अन्यत्र श्रम करना कितनी मूर्खता है, वह दु:ख का कारण ही होगा ।

वचनामृत ग.प्र. २४ में श्रीहरि कहते हैं कि ''पोतानुं मन स्थिर थयु छे ने भगवाननो निश्चय पण अतिशय दृढ छे तो पण हैया मां अतिशय आनंद आवतो नथी जे हुं धन्य छुं ने कृतार्थ थयो छुं अने आ संसारमां जे जीव छे ते काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, आशा, तृष्णा इत्यादि से परेशान थता फरे छे । अने त्रिविधताप मां रात-दिवस बडे छे अने मने तो प्रगट पुरुषोत्तम में करुणा करीने पोतानुं स्वरुप ओळखाव्युं छे ने काम-क्रोधादि सर्वे विकारथी रहित कर्यो छे अने नारद सनकादिक जेवा संत तेना समागममां राख्यो छे । माटे मारुं मोटुं भाग्य छे । एवो विचार नथी करतो ने आठे पहार अतिशय आनंद मां नथी वरततो ते पण हरिना भक्त ने मोटी खोट छे । जेम बालक ना हाथमां चिंतामणी लीधी होय तेनुं तेने महात्म्य नथी । एटले तेने तेनो आनंद नथी तेम भगवान स्वामिनारायण मण्या छे फिर भी मन में यह भाव नहीं रहता । यह जो नहीं समझता वही सबसे बड़ी कमी है । यही हरि के मुख से निकला अमृतरस है । स्वाति नक्षत्र में परमहंसो द्वारा विशिष्ट प्रकार की ध्वनि है । श्रीहरि हम सभी को जहाँ पर लेजाने के लिये इस धरती पर पधारे वहाँ शुद्ध-निर्मल सुख के सिवाय कुछ भी नहीं है, भोग विलास वहाँ नहीं है । छोटे-बड़े अवतारों का भी वहाँ प्रवेश नहीं है । वहाँ पर साथ लेजाने के लिये श्रीहरि पूर्व तैयारी करा रहे हैं । भूख-प्यास मान-अपमान, सुख-दु:ख से बहुत दूर वहाँ की व्यवस्था है ।

इस वात को प्रमाणित करते हुये श्रीहरि सारंगपुर के वचनामृत में कहते हैं कि, ''हुं चैतन्य छुं ने देह नाशवंत छे अने हुं आनंदरुप छुं ने देह दु:ख रुप छे .....'' इस प्रकार की ही हमारी बुद्धि तथा समजदारी से हमारे आनंद को छलाया सा खड़ा कर दिया है । परंतु प्रत्येक परिस्थिति में असीम आनंद में रहना ही आदर्श संत का लक्षण है । घास के अंकुर की तरह संजोगो के अनुसार दिशा न बदलने वाले पर्वत की भांति आनंद में खोये रहने वाले को ही भगवनने गीता में स्थितप्रज्ञ कहा है । मस्ती में कान हिलाने से बेहतर है कि गौरवपूर्वक सीना तान कर कहना चाहिये की भगवान जिस प्रकार रखेंगे उसी में आनंदपूर्वक भजन करते रहेंगे, ऐसे अनकंडिशनल भजन से अनकंडिशनल व्यवहार से अनकंडिशनल सत्संग से भगवान को अति प्रसन्न करना चाहिए । अनन्य आश्रित उसे ही कहते है जो किसी भी परिस्थिति में परेशान या विचलित न होने पाएं । अलमस्ति आनंद विभोर होकर प्रभु के पास बैठकर सभी को भजन-भक्ति में गुलतान रखें । ऐसे भक्तों के साथ कीर्तन-भजन-धुन करने पर ऐसी मस्ती छा जाती है कि मानो दिवानगी सी छा गई हो ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज के नए नियुक्त हुए पूजारी

पूजारी स.गु. शास्त्री स्वामी प्राणजीवनदासजी

गुरु स.गु. स्वामी नरनारायणदासजी ।

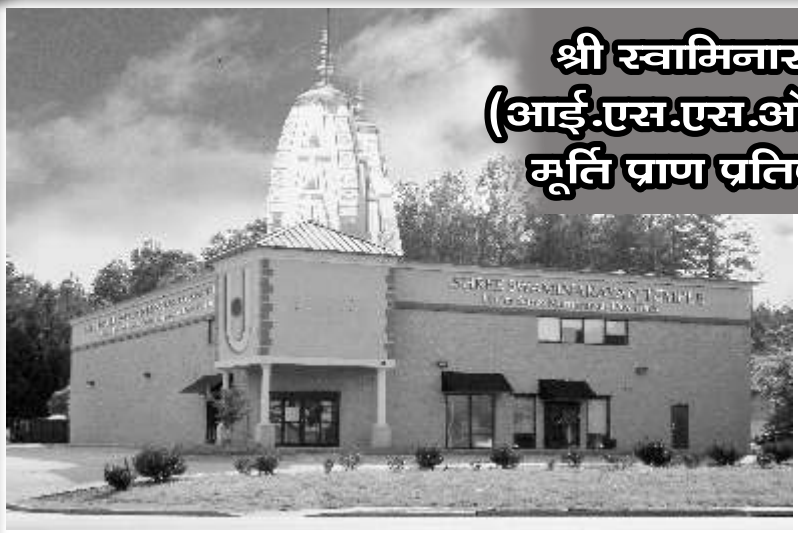

श्री स्वामिनारायण मंदिर (आई.एस.एस.ओ.) एटलान्टा में मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव

- अल्पेश पटेल (पीजवाला),
सुरेशभाई (कठलालवाला)

श्री नरनारायणदेव देश की इन्टरनेशनल संस्था आई.एस.एस.ओ. की स्थापना प.पू. बड़े महाराजश्रीने अमेरिका में सत्संग के प्रचार प्रसार के लिये की थी । उसी के परिणाम स्वरुप आज भव्य मंदिर का निर्माण विदेश की धरती पर होता जा रहा है।

इन मंदिरो का आयोजन तथा संचालन युवा पीढी कर रही है। आज की युवा पीढी पश्चिम की संस्कृति से खूब प्रभावित हुई है, इसलिये उन्हें सत्संग में लाना एक चेलेन्ज के समान है। मंदिरों के द्वारा ही उन्हें इस दिशा में लाया जा सकता है, इसलिये यह अभियान चालू किया गया है।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री वर्तमान पीठाधिपति ने ज्योर्जिया स्टेट के एटलान्टा शहर में मंदिर निर्माण का संकल्प किया और हरिभक्तों के सहयोग से वह संकल्प मात्र आठ महीने में पूर्ण हो गया। इन्टरनेशनल ८५ नंबर के हाईवे पर नोर्थ ९९ में एक्झीट पर नोरक्रो शहर में सम्पूर्ण व्यवस्था से सुसज्ज मंदिर का निर्माण कार्य हो गया।

यहाँ की कमेटी के प्रमुख दक्षेशभाई तथा वाइस प्रेसिडेन्ट किरीटभाई तथा राजुभाई पटेल के नेतृत्व में चार महीने में ही मंदिर का रिनीवेशन कार्य पूर्ण हो गया। छ अगस्त २०११ को मूर्ति प्रतिष्ठा होने वाली थी उससे पूर्व सम्पूर्ण तैयारी हो गयी । एटलान्टा के हरिभक्तों के ऊपर मानो श्रीहरि की कृपा का बरसात हो रहा था। एक महीने पहले से सभी हरिभक्त अपनी नौकरी से अवकाश लेकर सेवा में लग गये थे। बालक भी अवकाशकाल में बाहर घूमने जाने की अपेक्षा मंदिर के कार्य में लग गये। स्त्री-पुरुष सभी तन, मन, धन से अपनी योग्यता के अनुसार सेवा में लग गये।

मंदिर खरीदने के लिये हरिभक्तों ने पांच लाख डोलर की लोन स्वयं भगवान के मंदिर के लिये दे दिया। जो कम हो रहा था उसे बैंक से लोन ले लिये।

करीब दो मिलियन डोलर के आयोजन हेतु प.पू. आचार्य महाराजश्री संतो के साथ पहुंचकर आयोजन के लिये आज्ञा कर दिये।

मूर्ति प्रतिष्ठा के दो हप्ते पहले ही सभी मिले । यह आई.एस.एस.ओ. के इतिहास में प्रथमबार ही हुआ है।

३१ जुलाई से ६ अगस्त तक सात दिन लगातार मूर्ति प्रतिष्ठा का कार्यक्रम चला । सुप्रसिद्ध कथाकार योगेन्द्रभाई भट्ट के व्यास पद पर भागवत कथा संपन्न हुई थी । प्रतिदिन कथा का लाभ करीब ५०० से १००० लोग ले रहे थे।

प.पू. आचार्य महाराजश्री ता. २-८-११ को जब पधारे उस समय एरपोर्ट पर भव्य स्वागत किया गया था । इस प्रसंग पर संत मंडल में शास्त्री स्वा.

पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी तथा शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी, शा. माधवजीवनदासजी, शा. माधवप्रसाददासजी, शा. सत्यस्वरुपदासजी, शा. धर्मकिशोरदासजी, शा. हरिप्रकाशदासजी, ब्रह्मचारी हरिस्वरुपानन्दजी, शा. अभिषेकप्रसाददासजी, शा. व्रजवल्लभदासजी, पार्षद वनराज भगत इत्यादि ११ संत पधारे थे । ४-५-६ अगस्त को महाविष्णुयाग का आयोजन किया गया था । पंच कुंडी याग में वेदोक्त विधिका लाभ हरिभक्त लिये थे ।

ता. ५-८-११ को भव्य शोभायात्रा निकाली गयी थी । ग्लोबल मोल के पुराने मंदिर से नये मंदिर तक की यात्रा में हजारो हरिभक्त जुड़े थे । प.पू. आचार्य महाराजश्री प्रतिदिन सभा में दर्शन का लाभ देते थे ।

ता. ६-८-११ को प्रातः काल में मूर्ति प्रतिष्ठा विधिशा. योगेन्द्र भट्ट ने करवायी थी । मंदिर में सभी के लिये उत्तम व्यवस्था की गयी थी । जिन्हे भीतर दर्शन का लाभ नहीं मिल रहा था वे टी.वी. पर दर्शन कर रहे थे । प्रातः ८ से ९-३० बजे तक प.पू. महाराज मूर्ति प्रतिष्ठा किये । उसके बाद महाभिषेक-पूजन-आरती इत्यादि करके सभी को दर्शन का लाभ दिये ।

प्रातः १०-०० बजे श्रृंगार आरती तथा विष्णुयाग समापन किया गया । इसके बाद ११ से १-३० बजे तक भगवान के प्रसादी की वस्तुओं की बोली बोली गयी, जिसे लेकर भक्तजन अपने घर पधारे ।

मंदिर के आयोजको का सन्मान किया गया, इसके साथ ही आई.एस.एस.ओ. के मंदिर के प्रेसिडेन्ट का सन्मान किया गया, बाद में श्री स्वामिनारायण मंदिर कालूपुर के ट्रस्टी श्री रतिलाल पटेलका भी सन्मान किया गया था ।

प.भ. जगदीशभाई पटेल नेशनल वीडी के प्रेसिडेन्ट द्वारा एटलान्टा के हरिभक्तों की प्रशंसा की गयी थी । प.पू. आचार्य महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । उत्सव में रसोई की सेवा बायर के हरिभक्तों ने की थी । महोत्सव में युवानो की सेवा से प्रभावित होकर प.पू. आचार्य महाराजश्रीने हार्दिक आशीर्वाद दिया था । रात्रि में छोटे बालकों का सांस्कृतिक कार्यक्रम रखा गया था, जिसे देखने प.पू. आचार्य महाराजश्री पधारे थे। समग्र उत्सव में प्रवीण काका तथा प्रेसिडेन्ट दक्षेश पटेल, किरीटभाई, राजूभाई, भावेश पटेल, तेजश पटेल, निरव पटेल, घनश्याम शास्त्री तथा महिला मंडल की सेवा सराहनीय थी ।

दीवाली का कार्यक्रम

आश्विन कृष्ण पक्ष-१२ ता. २४-१०-२०११ सोमवार बजे के बाद धनलक्ष्मी पूजन का मुहूर्त है तो पूजा रात्रि में ७-३० से ९-३० को होगी ।

आश्विन कृष्ण पक्ष-१३/१४ ता. २५-१०-२०११ मंगलवार को काली चर्तुदर्शी श्री हनुमानजी की पूजन आरती शाम ७-३० बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से सम्पन्न होगी ।

आश्विन कृष्ण पक्ष-३० ता. २६-१०-२०११ बुधवार को दीपोत्सवी-दिपावली अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में प्रसादी के सभामंडप में समूह शारदा पूजन शाम को ६-३० बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के हाथों से विधिपूर्वक संपन्न होगा ।

कार्तिक शुक्ल पक्ष-१ ता. २७-१०-२०११ गुरुवार नूतन वर्ष के दिन श्री गोवर्धन पूजन-बलिपूजन ठाकुरजी का अन्नकूटोत्सव मनाया जाएगा ।

मंगल आरती : प्रात ५-०० बजे

श्रृंगार आरती : प्रातः ६-३० बजे

अन्नकूट आरती : सुबह १०-१० बजे (दर्शन दोपहर १२-०० से ४-०० बजे)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों से होगी । उसके बाद बैठक (ओफिस) में दर्शन-आशीर्वाद का लाभ मिलेगा ।

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में दर्शन करने आने वाले हरिभक्तों को मानो ऐसी अनुभूति होती है कि श्रीजी महाराज साक्षात् विराजमान हों तथा उससे प्रेरित होकर बार-बार दर्शन करने के लिए लोग आते हैं और प्रत्येक बार नूतन अनुभूति, नयी संतोष की भावना जागृत होती है और वीझिटर्स बुक में अपने नाम भी अंकित करते जाते हैं। कुछ लोग नहीं लिख पाते क्योंकि उस अलौकिक अनुभव को शब्दों में वर्णित करना संभव नहीं है। अपना म्युजियम वास्तव में इतने कम समय में श्रीहरि निर्मित मंदिरो की कक्षा में स्थान प्राप्त किया है। यह आश्चर्य की बात इसलिए नहीं है क्योंकि इसमें स्वयं श्रीहरि के वंशज प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री का कठिन परिश्रम म्युजियम के कोने-कोने में दिखाई पड़ता है।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम भेंट योजना के अंतर्गत दाताओं की सूचि

रु. १,००,०००/-	स्वर्गीय कानजीभाई भीमजी राधावणी (बड़दिया वर्तमान में नाइरोबी)
रु. ५१,०००/-	शास्त्री स्वामी हरिप्रकाशदास (गांधीनगर)
रु. १९,०००/-	श्री नरेन्द्र के. मामतोरा
रु. १९,०००/-	श्री पुनीत मामतोरा
रु. १९,०००/-	श्रीमती हिरवा मामतोरा
रु. १९,०००/-	चि. विहांग मामतोरा
रु. १९,०००/-	चि. रेवा मामतोरा
रु. १९,०००/-	पूजा मामतोरा
रु. १५,०००/-	जीवीबहन गोबरदास पटेल - चेरीटेबल ट्रस्ट ऊंझा
रु. १०,०००/-	जयदीपभाई पटेल - अहमदाबाद
रु. ५,०००/-	पार्षद चंदु भगत गु. बालकृष्णदासजी - मूली
रु. ५,०००/-	हरेशभाई डाह्याभाई मोरी - विसनगर
रु. ५,०००/-	कमलेशभाई नारणदास पटेल - कांकरिया
रु. ५,०००/-	डॉ. हरिकृष्णभाई गोकलभाई पटेल - सापावाडा
रु. ५,०००/-	ईश्वरभाई डुंगरशीभाई - बापूनगर
रु. ५,०००/-	महेशभाई एच. पटेल -लालोडा-वापी

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायणदेव के अभिषेकार्थी यजमानों की नामावली

ता. ३०	इन्दुलाल गणपतलाल मोदी, अरविंदभाई इन्दुलाल मोदी कृते - जतीन अरविंदभाई यु.एस.ए. अभ्यास के लिये जाने वाले - साबरमती
ता. ०२	निरज पीयूषकुमार जोषी - वडोदरा
ता. ०७	स्वर्गीय रमण मगनलाल पटेल - कुंडालवाला । कृते परेश रमणलाल पटेल तथा जोशी बहन रमणलाल पटेल
ता. ०८	कांतिभाई मावजीभाई खीमाणी - बोल्टन वाला
ता. ०९	श्री नरनारायण युवक मंडल - कांकरिया श्री नरनारायणदेव महिला मंडल - कांकरिया
ता. १४	श्री स्वा. मंदिर - लेस्टर सत्संग समाज
ता. २२	सोनी बलवंतराय रतिलाल लाठीवाला
ता. २८	डॉ. डी.जे. भावसार सह परिवार - महेसाणा
ता. ३१	प.पू. बड़ी गादीवालाजी की शुभ प्रेरणा से फूल मंडल की तरफ से श्री नरनारायणदेव महिला मंडल - असलाली अ.नि. कानजीभाई भीमजीभाई राघवाणी के स्मरणार्थ आयोजित पारायण के उपलक्ष्य में (बलदिया-कच्छ वर्तमान में नाईरोबी

संप्रदाय में एकमात्र व्यवस्था स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा। महाभिषेक लिरवाने के लिए संपर्क कीजिए।
म्युजियम मोबाईल : ९८७९५ ४९५९७, प.भ. परषोत्तमभाई (दासभाई) बापुनगर : ९९२५०४२६८६
www.swaminarayanmuseum.org/com • email:swaminarayanmuseum@gmail.com

अभिप्राय

Today is one of the best day of my life !!
Shri Swaminarayan Bhagvan blessed us with Mahapuja & Abhishek. The Mahapuja was Conducted very well and Abhishek of Shri Narnarnarayan Dev was a divine experince ! Swmainarayan Museum is an Excellent creation Which will be a "Tirthdham" for Satsangis and Mumukshus.

This Museum Should be advertised as a tourist destination as well as a cultural / religious place of visit. One idea is to advertise the museum through Gujarat Tourism, Incredible India and international newspaper/media.

Pujya Mota Maharajshri's vision has been really awesome and well executed. Koti Koti Dandvat Pranam to Mota Maharajshri for giving blessing the Satsang with the Museum !!

- Nirj P. Joshi (USA)

म्युझियम देखकर परम आनंद हुआ । यह आनंद समाधिसे भी अधिक है। श्रीजी महाराज ने वचनामृत में कहा है कि - कथा सुनने से जितना मन निर्विकल्प होता है, उनता अन्य साधन से नहीं होता, लेकिन यहाँ म्युझियम का दर्शन करने से मन निर्विकल्प स्थिति को प्राप्त हो गया। भगवान के सिवाय दूसरा यहाँ पर कुछ भी नहीं है, भौतिकता से बिलकुल अलग प्रभु के पास पहुँचाने के लिए एक मात्र इस म्युझियम के प्रणता पू. श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराज को कोटि सह प्रणाम। - ज्ञानप्रकाशदास

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, आचार्य महाराजश्री, लालजी महाराजश्री तथा संत-हरिभक्तों को धन्यवाद देने लायक है। विशेष रुपसे जिसके ऋण से मुक्त होना बड़ा कठिन है पू. बड़े महाराजश्रीने जो सर्वोपरिता का यहाँ दृश्य प्रस्तुत किया है। म्युझियम की व्यवस्था - मूर्तियों की तथा प्रसादी की वस्तुओं की देख रेख का इतना सुन्दर आयोजन किया गया है कि जिसके दर्शन से विशेष आनंद की अनुभूति होती है। जहाँ पर महाराज की प्रसादी भूत छड़ी, गोला, कटारी, चरणारविन्द तथा विशेष रुप से प्रभु के हस्ताक्षर वाला पत्र सभी को आनन्द दे रहा है। यह कोई बखान नहीं है, यह हृदय का उद्‌गार है। जिसे व्यक्त किये विना रहा नही जाता। - जीज्ञेश वी. काकडीया जयदीप बी. गावणी, सुरत

अद्‌भुत ! अद्‌भुत !
आश्चर्यम् !

१८ वीं सदी में स्वयं पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान प्रगट होकर कलि के काल में बचाने हेतु धरती पर प्रगट हुये।

जब कि २१ वी सदी में पू. बड़े महाराजश्रीने इस तरह की अद्‌भुत म्युजियम बनाये कि महाराज को सभी प्रसादी की वस्तुओं का एक ही स्थान पर दर्शन करके मोक्ष का मार्ग खुल जा रहा है। बड़े महाराजश्री का परिश्रम, सत्संगियों के प्रति भावना, सर्व जीव हितावह का संदेश उनकी उदारता का परिचायक है।

बड़े महाराजश्री तथा पू. आचार्य महाराजश्री की हम सभी की ७१ पीढी ऋणी रहेगी।

ऐसे महाराजश्री तथा पू. बड़े महाराजश्री के चरणों में साष्टांग दंडवत के साथ जयश्री स्वामिनारायण । **Incredible India ! Incredible Museam ! Incrdible Museam !**

- ब्रज पटेल, दहेगाँव

मुंबई से आये हुये निष्णातों द्वारा प्राणीक हीलींग शरीर ऊर्जा के विषय में दो दिन का शिबिर म्युजियम में रखा गया था।

समस्त सत्संग के लिये सूचना

समस्त सत्संग को सूचित किया जाता है कि अहमदाबाद देश तथा मूली देश में चलने वाले गुरुकुल (१) कोटेश्वर (२) असारवा (३) जेतलपुर (४) माउन्ट आबु (५) वडनगर (६) विसनगर (७) चिलोडा (८) झिलवाणा (९) इसंड (१०) मकनसर इन सभी गुरुकुलों की संलग्नता श्री नरनारायणदेव देश अहमदाबाद तथा मूली देश के साथ है। इसके अलांवा अन्य जितने गुरुकुल चलते हैं पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. आचार्य महाराजश्री, पू. लालजी महाराजश्री का नाम का उपयोग करते हैं। लेकिन इसके लिये संस्था की अनुमति नहीं है। इसकी जानकारी सत्संगियों को होनी चाहिये।

- आदेश से

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

सेवा करो सुखी बनो

– शा. हरिप्रियदासजी (गांधीनगर)

ठन्ढी का समय था । आकाश में अरुणोदय होने लगा था । सूर्यनारायण अपने सात घोडों की सवारी करके धीरे-धीरे ऊपर की तरफ बढ रहे थे । आकाश में सतरंगी बादलों का विविधप्रकार दिखाई दे रहा था । बादलों के बीच में से आकाश पृथ्वी को छू रहा था । इतना सुहाना अवसर था कि वातावरण प्रातः काल मानों खिलउठा हो, ठीक इसी समय घनश्याम महाराज उठ गये ।

आज की वात नहीं, बल्कि घनश्याम महाराज सदा ब्रह्ममूहूर्त में उठ जाते थे । मित्रों ! समझना यहाँ यह है कि सूर्योदय के पहले उठना चाहिये या बाद में ? सभी ने एक साथ आवाज दी की सूर्योदय से पहले । ठीक उत्तर है । सूर्योदय से पहले उठने से बल-बुद्धि का विकाश होता है । शरीर में विकास होता है । स्वास्थ की दृष्टि से भी तथा आध्यात्मिक दृष्टि से भी । इसी को ध्यान में रखकर लोगों को उपदेश के लिये घनश्याम महाराज ब्रह्ममुहूर्त में उठते थे ।

उत्तर प्रदेश में स्वर्ग के समान छपैया धाम गुलाबी ठन्ढी के मौसम में अति सुहाना लगता था । ऐसे प्रभात के समय घनश्याम को जगा देखकर भक्ति माता ने सोचा कि घनश्याम जग गये है तो पहले उन्हे स्नानादि क्रिया कराकर कपिला गौ का दूधपिला के बाद में दूसरा काम करुं । चुल्हे पर पानी गरम की उससे उन्हें स्नान कराई बाद में चन्दनानुलेप की मचियां के ऊपर उन्हें बैठाई तथा स्वयं बैठी । सुन्दर रेशमीवस्त्र धारण कराई । उसी समय उनके दर्शन के लिये ब्रह्मा विष्णु - महेश उपस्थित हुये । दर्शन करके आनन्दित हुये । माताजी ने पूछा आप तीनों कौन है तब तीनो मूर्तियों ने अपने स्वरुप को बताया और कहा कि माताजी हम आज बडे भाग्यशाली है कि प्रभु का इस दिव्यरुप में दर्शन कर रहे है । आपके प्रताप से ही हमें आज प्रभु की सेवा का अवसर मिला, दर्शन का अवसर मिला । तीनों देवों ने कहा माताजी आपके घनश्याम तो साक्षात् परमात्मा है बाद में तीनों अपने दिव्य स्वरुप में वहीं पर अन्तर्ध्यान हो गये । माताजी प्रभु की शरीर को व्यवस्थित तैयार करके शक्कर मिश्रित दूधका भोग लगाती है । प्रभु हंसते-हंसते उसे पी जाते हैं । बाद में बाहर के चौगान में खेलते हैं और माताजी अपने गृह कार्य को करती है ।

बालकों ! आप लोग देखे न देवों को भी प्रभु के दर्शन का तथा सेवा करने का लाभ मिला । आप लोग इस चरित्र में से क्या सीखे ? इसमें से यह सीखना है कि सेवा बताने की जरुरत नहीं होती करने की जरुरत होती है । सेवा करके अपने को धन्य समझना चाहिये । जीवन में यह ध्यान रखना चाहिये कि सुख की चाभी सेवा है । इसलिये सेवा करके सुखी बनना चाहिये ।

●

हरिः हरति पापानि

– साधु श्रीरंगदास (गांधीनगर)

''भयंकर लागतो जोबन वडतालो, भक्त केवी रीते थयो । माथुं वाढनारो जोबन वडतालो, शीश नमावता केवी रीते थयो । गाम लूंटनारों जोबन वडतालो, संस्कारोना घरेणा साचवतो केवी रीते थयो।

डाक्टर के सम्पर्क से शरीर के सभी अंगो का आपरेशन हो सकता है । लेकिन मन में स्थित दोष पाप, अत्याचार, भ्रष्टाचार, विकृति का कोई डाक्टर ओपरेशन नहीं कर सकता है, उसे देख भी नहीं सकता । लेकिन श्रद्धा से उसे स्वीकार अवश्य किया जा सकता

है। जोबनपगी का आपरेशन श्रीहरिने किस तरह किया? किस संयोग के सर्जन से यह शक्य हुआ ? इसकी सुंदर कथा यहाँ वांचते हैं।

जोबन पगी एकबार डभाण गया। उस समय वहाँ यज्ञ चल रहा था। वह वहाँ सेवा करने नहीं गया था। दुष्ट विचार का था। स्वामिनारायण भगवान जेतलपुर के बाद डभाण में महायज्ञ प्रारंभ किये थे। लाखो हरिभक्त आये हुए थे। जोबन पगी भी वहाँ पहुंच गया। वह भगवान स्वामिनारायण की माणकी घोड़ी के विषय में जानता था।

उसकी गति अबाधथी, तीव्रगति थी। उसे चाबुक की जरुरत ही नहीं पड़ती थी। असवार को समझकर अपनी गति करती थी। उस घोडी को जैसे करके भी चुराना था। इस दुष्टभाव से वह वडताल से डभाण आया था। लेकिन हथियारधारी अनेकों काठी दरबार चौकी दारी कर रहे थे। उसके मन में हुआ कि यहाँ बल का उपयोग नहीं करना है बुद्धि का उपयोग करना है।

नाजा जोगिया घोडशाल की चौकीदारी कर रहे थे। जोबन पगी ने उन्हे देख लिया। अब वह सभी जगहों पर स्वामिनारायण को ही देखने लगा। जिस तरह अन्य लोग स्वामिनारायण स्वामिनारायण कहते थे वह भी कहने लगा जय स्वामिनारायण।

''हरिः हरति पापानि दुष्टचित्तैरपि स्मृतः''

हरि का नाम स्मरण करने से दुष्ट चितवाले के पाप को हरि हर लेते है।

नाजा जोगिया भोला स्वभाव का था। जो चौकीदारी करता है उसे भोला स्वभाव का नहीं होना चाहिये। भोजन परसने वाला भोला हो तो चलेगा, कोई को दो लड्डू अधिक खिला देगा इससे अधिक और क्या करेगा, लेकिन चौकीदार भोला हो तो सर्वस्व जाने की डर है। नाजा जोगिया भले भोला था लेकिन भगवान तो उसके स्वभाव से परचित थे वे उनके साथ थे, वे उनकी रक्षा करते थे। अब जोबनपगी पहुंच गया नाजा जोगिया के पास, जय स्वामिनारायण, हम माणकी का दर्शन करना चाहते हैं। माणकी का दर्शन करके क्या करोगे। अरे ! भाई लाखों की भीड़ में महाराज का दर्शन-चरण स्पर्श संभव नहीं इसलिये माणकी का ही चरण स्पर्श करने को मिल जाय तो बहुत। यह सुनकर नाजा जोगिया का हृदय पिघल गया बिचार करने लगा कि यह कितना श्रद्धालु है, इसकी कितनी पवित्र आत्मा है - अवश्य इसे महाराज की घोड़ी का दर्शन कराना चाहिये। अपने साथ जोबन पगी को माणकी के पास ले गया और कहने लगा कि यह महाराज की माणकी घोडी है, इसका दर्शन करलो। वह अच्छी तरह पहचान कर लिया। अब उसे किस तरह चुराना है उसकी तैयारी करने लगा। रात्री के समय वहाँ पहुंच गया और मनमें लगातार स्वामिनारायण-स्वामिनारायण के नाम का स्मरण करते रहने से देखा कि यहाँ भगवान स्वामिनारायण स्वयं घोड़ी के पास खड़े है, वह वही छिप गया लेकिन रात भर इस दृश्य को देखता रहा अब धीरे धीरे उसके मन का पाप प्रभु ने हरण कर लिया। जिसकी मानसिकता खराब थी, जो चोर था, डाकू था वह आज भगवान का भक्त हो गया।

मित्रो ! भगवान तो शरणागत वत्सल है, एकबार भी सच्चे भाव से जो उनकी शरण में जाता है तो भगवान उसके अनंतपाप को हर लेते हैं। उसको निर्मल बना देते हैं। इसी लिये उनका नाम ''हरि'' है।

जन मंगल में शतानंद स्वामी ने भगवान के १०८ नाम में एकनाम हरि भी लिखा है।

हरि का अर्थ है हरने वाला।

भगवान पाप को हरलेते हैं। इसलिये भगवान का नाम हरि है। किससे पाप हरते हैं ? जो उनका स्मरण करता है उसके पाप हरते हैं। जो निरंतर उनका चिन्तन करता है, उसके पाप हरते हैं। भगवान के नाम का जो जप करता है उसके पाप को ठाकुरजी हरलेते हैं।

भक्ति सुधा

प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री ने नियम की एकादशी के दिन नियम दिया - "आहार शुद्ध रखने से अन्तः शत्रुओं पर विजय मिलती है"

- संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल (घोड़ासर)

श्रीजी महाराजने ग.प्र.प्र. के १८ वें वचनामृत में ज्ञान इन्द्रियों को वश में रखने के लिये आहार के विषय में विस्तार पूर्वक समझाया है। पंच इन्द्रियों के आहार को अवश्य शुद्ध रखना। इन्द्रियों के माध्यम से जीव आहार लेता है। इसलिये शुद्ध आहार लेने से अन्तः करण शुद्ध होता है। शुद्ध अन्तः करण में ही भगवान की अखंड स्मृति बनी रहती है। पंच इन्द्रियों के किसी भी एक इन्द्रिय का आहार मलिन हो तो अन्तःकरण मलिन हो जाता है। इसलिये भगवान के भक्त को भजन में यदि कोई विक्षेप आता है तो उसका कारण पंच इन्द्रियों का विषय है। लेकिन अन्तःकरण नहीं।

इन्हीं उपरोक्त विषयों पर ध्यान देकर ही प.पू. गादीवाला ने हम सभी पर कृपा करके इन्द्रियों के आहार को शुद्ध रखने के बाद अन्तःकरण के शत्रुओं पर विजय प्राप्त की जा सकती है ऐसा नियम वताया है। इसके लिये कैसा प्रयत्न करना चाहिये। तो पहले शरीर को निरोगी रखना चाहिये। जैसा मन कहे वैसा मनमना भोजन नहीं करना चाहिये। आपको कोई रोग हो तो दवा के साथ पथ्य अवश्य रखें।

दवा के साथ पथ्य न होतो दवा उचित लाभ नहीं करती। इन्द्रियों को अनुकुल खोराक न देना भी पथ्य है। इन्द्रियां तो अपने अनुकूल सुख के लिये सतत भटकती रहती हैं। इस प्रयत्न में से ही काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार इत्यादि उत्पन्न होते है। इसलिये मन में जब भी ऐसे विचार उत्पन्न हों तब ज्ञान में विशेष प्रकार की जागृति रखनी चाहिये। जैसे - जीभ के अनुकूल स्वादिष्ट भोजन मिल जाय तो अधिक भोजन हो जाता है। इसी तरह किसी की निन्दा होती हो तो उस निंदा को सुनने में कान लग जाता है। इससे मानसिक द्वेष-ईर्ष्या उत्पन्न होती है। आंख भी अनुकूल विषय देखने में तल्लीन हो जाती है। ए सभी इन्द्रियां अपने मन अनुकूल विषयों को प्राप्त करलेती है। इसीलिये मन नियंत्रण में नही रहता। परिणाम स्वरुप मन ललचाकर उसी में लिप्त हो जाता है। इसी से अन्तः शत्रु आक्रामक हो जाते हैं। जिस तरह सामान्य जीवन में अमुक व्यक्ति शत्रु जैसे होते हैं। क्योंकि वे समय आने पर हानि करने वाले होते हैं। ऐसे लोग अपने बड़े सन्निकट के होते हैं। उनका आप कुछ कर भी नही सकते। क्योंकि वे आपसे अधिक बलवान होते हैं। उसके लिये उपाय यह है कि उनके साथ मित्रता कर लेनी चाहिये। लेकिन सावधानी आवश्यक है। वह इस तरह कि उससे दबाव में न आना, अन्यथा वह हानि पहुंचा सकता है। दूसरी उपाय यह कि आप उसकी शरणागति स्वीकार कर लेते हैं। तीसरी उपाय यह है कि - शत्रु के शत्रु के साथ मित्रता कर लेते हैं। इससे आपके शत्रु के सामने आपकी ताकात कम हो जाती है। यह बात हुई बाह्य जगत के शत्रुओं की। लेकिन अन्तः शत्रुओं को जीतने के लिये जैसे काम को जीतना हो तो ब्रह्मचर्य के साथ मित्रता करनी पड़ेगी। क्रोधको जीतना हो तो शांति के साथ मित्रता करनी पड़ेगी। अहंकार को जीतना हो तो सरलता के साथ मित्रता करनी पडेगी तथा परमात्मा की शरणागति स्वीकार करनी पड़ेगी। लोभ का शत्रु दान है। दान करने से लोभ की गांठ छूट जाती है। वैराग्य रखने से भी लोभ नही रहता। वैराग्य का मतलब नाशवंत जगत के प्रति उदासीन भाव। इसलिये जगत की कोई भी वस्तु के प्रति लोभ-मोह नहीं रखना चाहिए। आप देखे होंगे कि किसी की स्मशान यात्रा जब निकलती है तब कंधा देने वाले बदलते रहते हैं। इसका मतलब यह कि इसी तरह जगत का सुख भी बदलता रहता है। इसलिये अन्तः शत्रुओं पर विजय प्राप्त करके शाश्वत परमात्मा में प्रेम करना चाहिये। ये सभी वृत्तियां सभी में होती है। परन्तु जो व्यक्ति महान होते हैं उन में ये वृतियां कम होती है। आप लोग भी प्रयाश करेंगे तो आप लोगों में भी प्रमाण कम हो जायेंगे। यही नियम है, जो बहुत कठिन है। फिर भी यह नियम आप सभी को इसलिये दे रही हूं कि आप सभी का जो भक्ति का मार्ग है वह दृढ होगा और आध्यात्मिक मार्ग प्रशस्त होगा। आप लोग भगवान से प्रार्थना करेंगे तो आप सभी की शक्ति और बढेगी। इस तरह के मार्ग में भगवान नरनारायणदेव आप सभी को शक्ति प्रदान करेंगे।

श्रीजी महाराज वचनामृत ग.म.प्र. १ के १८ वें कहा है कि "आ मारु वचन छे ते भला थई ने सर्वे जरुर राखज्यो तो जाणीये तमे अमारु सर्व सेवा करी अने अमे पण तमने सर्वेने

आशीर्वाद दईशुं अने तमो ऊपर घणां प्रसन्न थइशुं । कां जे तमे अमारो दाखडो सुफल कर्यो अने भगवाननुं धाम छे त्यां आपने सर्वे भेगा रहीशुं अने जो एम नही रहो तो तमारे अने अमारे घणुं छेटु थई जशे । इसलिये प.पू. गादीवालाजी की आज्ञा का हम सभी पालन करेंगे इसी से आत्म शक्ति बढेगी । नियम की दृढता जिसके जीवन में होगी वही सुखी होगा ।

●

सुख शान्ति का उपाय

- सां.यो. कोकिलाबा (सुरेन्द्रनगर)

मनुष्य देह मिला वह भी सत्संग में मिला । अब मात्र सत्संग का विकास करना है । जितना अधिक सत्संग हो उतना अच्छा । जीवन में आहार का जितना महत्व है उतना ही सत्संगका महत्व है । इसलिये शिक्षापत्री में भगवान स्वामिनारायण ने आज्ञा की है कि ''नित्य साधु का समागम करना चाहिये ।'' ब्रह्मानंद स्वामी ने भी कहा है कि ''संत समागम कीजै हो निशिदिन संत समागम कीजे ।''

भोजन कम मिले तो चलेगा । पानी न मिले तो चलेगा, लेकिन श्वास के बिना जिन्दगी का चलना संभव नहीं । इसी तरह सत्संग के विना जीवन का चलना ओक्सीजन जैसा है । सत्संग करने से जीवात्मा सुखी होता है, पुष्ट होता है, शान्ति मिलती है । जो सच्चे संत का समागम करते हैं तथा पंच विषयों से दूर रहते हैं उन्हें ही जीवन में शान्ति मिलती है । भगवान उन्हें ही सुखी बनाते हैं ।

भगवान के सिवाय कहीं सुख नहीं है, शान्ति नहीं है । सुख-शान्ति तो भगवान की शरण में है । इसलिये भगवान की शरण स्वीकारना श्रेयष्कर है । किसी चींटे को कांच के भीतर बन्द कर दिया जाय तो वह क्या करेगा ? उसी में ऊपर से नीचे करता रहेगा । यदि उसी में गुण डाल दें तो उसी में चिपका रहेगा । वहीं पर स्थिर हो जायेगा । इसी तरह यह जीव संसार में जहाँ तहाँ भटकता रहता है । लेकिन भगवान की मूर्ति रुपी गुण में मन को लगादे तो सुख शांति होने लगेगी । इसलिये भगवान के सिवाय कहीं भी सुख-शांति नहीं है । नियमित कथा, कीर्तन ध्यान, प्रार्थना करने से टेन्शन दूर होता है । इससे स्वास्थ्य भी अच्छा रहता है । अन्यथा टेन्शन से बी.पी., हार्ट अटेक इत्यादि रोगों का आक्रमण होता है । परंतु नियमित कथा-संत समागम करें प्रार्थना कीर्तन करें तो निश्चित ही भयंकर से भयंकर रोग नष्ट हो सकते हैं । मन में सुख शांति मिलती है । हृदय में धर्म, ज्ञान, वैराग्य इत्यादि सद्‌गुणों का उदय होने लगता है ।

समुद्र के किनारे वाले विस्तार में देखने को मिलता है कि धरती के भीतर से मीठापानी बोरिंग या मशीन से निकालने के बाद उस जगह पर समुद्र का खारा पानी भर जाता है । इसी तरह मीठे पानी की तरह भक्ति है, सत्संग है । ये दोनो जिसके जीवन से घटने लगते है उसके जीवन में खारापानी रुपी - हिंसा, भ्रष्टाचार, फेशन, व्यसन इत्यादि का आक्रमण (भराव) होने लगता है । इससे सुख-शांति भी खत्म हो जाती है । इसलिये सुख-शांति की चाहना वाला व्यक्ति भक्ति तथा सत्संग करे इससे बाहर का कुसंग, प्रदूषण, कुटेव शरीर में प्रवेश नहीं करपाते । सत्संग से हृदय निर्मल होता है और सुख शांति मिलती है । भगवान के सिवाय कहीं सुख शांति नहीं है । इसलिये प्रभु परायण जीवन बनाना चाहिये । सुख शांति के मूल में आत्मा-परमात्मा का ज्ञान है । इस ज्ञान से अपने आप दुःख दूर होने लगता है । भगवान तथा सद्‌गुरु की शरणागति स्वीकारने पर ज्ञान का उदय होगा, मन में प्रभु स्मरण बना रहेगा, तब दुःख में सुख-शांति मिलती रहेगी ।

धर्म के सेवन से मनुष्य में मानवता का आविर्भाव होता है । धर्म का एक ही फल है कि श्री नरनारायण के चरणारविंद में प्रीति हो । प्रभु की प्रसन्नता प्राप्त करके सुख-शांति प्राप्त की जा सकती है । इसके लिये सतत सावधान रहना पड़ेगा । निरन्तर मनमें प्रभु को रखना पड़ेगा परमात्मा को साथ रखेंगे तो सुख-शांति अपने आप प्राप्त होगी ।

●

दुष्काल को विदाई दिया

- तरलाबहन अतुलभाई पोथीवाला (मेमनगर-अहमदाबाद)

अगणोतेरा के दुष्काल के निमित्त महाराज ने संतो को रसास्वाद न करने का नियम दिया । संत छ प्रकार के रस विना वाला भोजन करते थे । इस तरह करते हुये करीब १ वर्ष बीत गया । इसलिये महाराजने होली के त्यौहार के प्रसंग पर सभी संतो को होली का उत्सव मनाने के लिये गढडा बुलाने का संकल्प किया ।

सभी जगहों पर पत्र लिख दिया गया । कुंडल तक लेने के लिये स्वयं गये । कुंटुल में मामैया तथा अमरापर दरबार के यहाँ रुके । वहीं पर संतो के मंडल पधारे । संतो की शरीर

सूख गयी थी । शरीर में पशलियां दिखाई दे रही थीं । कितने संत नमक छोड़ दिये थे इसलिये उन्हें रतौंधी हो गयी थी । उसमें भी संतो को इतना कड़ा नियम दिया गया की शरीर कृष हो गया, इसे देखकर हरिभक्तों की आंखो में पानी भर आया ।

यह स्थिति देखकर सभी ने महाराज से कहा कि महाराज! इनको अब नियम से मुक्त कर दीजिये । राजा साहब की माताजी ने कहा कि महाराज ! ''ऐसा तपस्वी वेश क्यों रखे हो ? यह जटा मस्तक से मुड़वा दो । रुद्राक्ष की माला निकाल कर तुलसी की कंठी धारण करो । आप भी सभी भोज्य पदार्थ ग्रहण करें और संतो को ग्रहण करावें । हमारे यहाँ आप संतो के साथ प्रसन्न होकर भोजन ग्रहण करें । आपके भोजन करते ही तथा संतो को भोजन करते ही दुष्काल नष्ट हो जायेगा । पृथ्वी पर पानी गिरेगा और पृथ्वी हरी भरी हो जायेगी ।

राईबाई का निर्दोष तथा भावात्मक वाणी सुनकर महाराज प्रसन्न हो गये । महाराज बाल कटवा दिये । संत भोजन के नियम का त्याग किये । रुद्राक्ष की माला गले में से उतारकर तुलसी की कंठी को धारण किये और संतो को वैष्णव वेश धारण करवाये इसके बाद जन्मवृष्टि होने लगी । इस तरह दुष्काल को दूर करके खुशहाल किये । देश-काल अच्छा हो गया । हरिभक्त भी प्रसन्न हो गये ।

●

संत समागम

- परमार भूमिका भगवानजीभाई (हालार-सुरत)

एक गाँव में एक अधेड़ ऊमर के एक व्यक्ति रहते थे । वे एकबार मंदिर में संतो के पास सत्संग करने गये । वहाँ उन्हें करीब १ महीना वीत गया । एकदिन संतो ने उन अधेड़ उम्र वाले व्यक्ति से कहा कि आपके घर में कौन कौन है, तब वे बेटा-बहु की बात करते हैं और अपने बेटे-बहू की कमी बताते हैं । यह सुनकर संतो ने कहा कि अब आप सदा के लिये यही रह जाइये । तब उस व्यक्तिने कहा कि सदा के लिये तो यहाँ अच्छा नहीं लगेगा । मैं अपने घर में ही रहूंगा । यह समझने लायक वात है - इस मंदिर में उन्हें कोई काम नहीं था - आदर-सम्मान था फिर भी यहाँ अच्छा नहीं लगा । यहाँ मात्र भगवान की भजन भक्ति करनी थी । अच्छा वातावरण था । घर में अपमान - घर की जवाबदारी दौड़-धूप, पुत्र बधू या बेटे की हूंफ यह सब था । फिर भी घर में जाने को तैयार वहां बेटे-बहू की याद आने लगी । यही बिडम्बना है । संसार में जीव सबकुछ सहन करने को तैयार है ।

यह मात्र दृष्टांत के लिये है । यद्यपि आपके जीवन में भी ऐसा होता है । पड़ोशी के घर में देखने को मिलता है । सगे सम्बन्धी-स्नेहीजन भले खराब बोले तो भी मन में गांठ नहीं पड़ेगी । लेकिन मंदिर में उत्सव या त्यौहार के समय किसी को थोडी अड़चन हो जाय तो मंदिर ना बन्द कर देते हैं और अन्यत्र चले जाते हैं । इस तरह हर व्यक्ति अवगुण लेने की कोशिश करता है, गुण ग्राहिता कम दिखाई देती है ।

इसी प्रसंग को ध्यान में रखकर एक हरिभक् गढडा में श्रीहरि से प्रश्न किया कि ''केटलाक तो घणा दिवस सुधी सत्संग करे छे तो पण तेने देह अने देहना संबन्धी मां जेटलु हेत थाय छे तेटलुं हेत सत्संगमां नथी जेनुं शुं कारण छे ?

तब श्रीजी महाराजने कहा कि ''तेने भगवाननुं माहात्म्य परिपूर्ण जाण्यां मां आव्युं होतुं नथी अने संतना योगे करीने भगवाननुं माहात्म्य परिपूर्ण जाण्या मां आवे ते संत ज्यारे तेना स्वभाव ऊपर बात करे त्यारे वातना करनारा जे साधु तेनो अवगुण ते छे ए पापे करीने सत्संगमां गाढ प्रीति थती नथी ।

भगवान मैं गाढ प्रीति करना हो तो संत समागम करना चाहिये और सम्प्रदाय का सिद्धान्त जानना चाहिये । जिस तह माता अपने पुत्र को कड़वी दवा पिलाकर रोग को मिटा देती है ठीक इसी तरह संत भी कठोर वचन कहकर भक्तों के भवरोग को मिटा देते हैं । जिस तरह बड़े पुरुष को प्रसन्नता से जीवन में सर्वत्र सफलता मिलती रहती है, उसी तरह बड़े पुरुष की नाराज होने पर जीवन अस्त व्यस्त हो जाता है । इसलिये प्रिय भक्तों ! जीवन में कभी भी भगवान में तथा भगवान के भक्त में तथा संत में अवगुण न आवे यह सदा चिन्तन करते रहना चाहिये ।

●

बापू नागर का अधःपतन

- जानकी रमेशभाई पटेल

श्रीजी महाराज ने जब महा रुद्रयाग किया उस समय अहमदाबाद के बाबूभाई नागर को श्रीहरि ने अपना विश्वास पात्र समझकर पैसे रुपये का हिसाब उन्हें दे दिया । श्रीहरि के चरण की जो भी भेंट आती बाबूभाई रखते थे। श्रीहरि

विश्वास में आकर कभी पूछते भी नहीं थे । वर्षो बीत गये वे हिसाब नहीं दिये न महाराज हिसाब मांगे । श्रीहरि के लिये जो खर्च होता उसे लिख लेते थे । जब कोई यज्ञ होता तो गाँव-गाँव से घी, गुण, अनाज इत्यादि सामग्री आती थी । वह भी नहीं लिखते थे । यज्ञ में से जो बचता उसे अपने घर भेज देते थे । भगवान स्वामिनारायण महारुद्र याग किये । अढडक धन आया फिर भी बाबूभाई नागर ने उस में भी कमी बताये, घट गया ऐसा निर्देश किये । जो घट गया उसे पूरा करने के लिये महाराज के पास आये, अन्तर्यामी प्रभुने उन रुपयों को पूर्ण कर दिया ।

एक दिन महाराज सभा में बैठे थे, श्रीहरि हंसते हुये कहे कि आपको सन्यासी बनना है ? सुराखाचर, सोमला खाचर, हंसते हुये हाँ कह दिये । श्रीहरिने तुरंत देवानंद स्वामी को आज्ञा किया कि इन्हें बाहर लेजाकर मुंडन करवा दो और सन्यासी बना दो । श्रीहरिने कहा, आप अपने घर की चिन्ता नहीं करना । आप की पत्नी अच्छी सत्संगी है । उनके जीवन पर्यन्त हम अन्न वस्त्र पूरा करेंगे । बापू को यह सत्य लगने लगा। अब वे चुप रहे और बिना कुछ कहे सन्यासी हो गये । लेकिन सन्यासी होने के बाद भी पाप कर्म की वासना रह गयी । कुछ समय के बाद उनकी मृत्यु होती है और पाप कर्म की वासना के कारण भूत बनना पड़ा । अपने भाई के शरीर में प्रवेश कर गये । अपने किये कर्म को वे स्वीकार भी किये । भगवानने हमारे ऊपर भरोसा किया और मैं उनके साथ विश्वास घात किया । भगवान कितने दयालु हैं ।

मैं इतना विश्वासघात किया और वे मेरे ऊपर कृपा करके मुझे सन्यासी बना दिये । मेरे किये कर्मो को भूल गये । मेरे कर्म का ख्याल किये होते तो इससे खराब दशा हुई होती । भगवान के लिये कभी एक पैसा खर्च नहीं किया । मैने जीवन में एक मात्र अपराधही किया था । जहाँ से पाप से छूटने का कर्म करना चाहिये वही पर पापाचरण करता रहा । भूत की योनि में भी प्रभु का नाम स्मरण चालू ही रहा । अपने भाई से कहे कि तूं जेतलपुर जा मेरी तरफ से प्रभु को प्रार्थना करो, मेरा उद्धार करें । बापू का भाई जेतलपुर गया । उस समय श्रीहरि सभा में विराजमान थे । भाई प्रभु के सामने बैठ गया और बापू उसकी शरीर में प्रवेश कर गये । उसकी शरीर में से अपने किये अपराधों की क्षमा मांगने लगे । मेरा उद्धार कर दीजिये - आप पतित पावन है, करुणा के सागर है, अधम उद्धारक हैं । यह सुनकर श्रीहरिने कहा कि तुम्हे एक जन्म और लेना पड़ेगा । संत का दास बनकर निष्कपट भाव से रहेगा फिर सभी दुःख का नाश होगा । सत्संगी होकर कुसंगी का काम किये हो इसलिये उस कर्म का फल तो भोगना पड़ेगा । ऐसा कहकर उसे भूतयोनि में से मुक्त किये । सत्संग में जन्म लिए, श्रीहरि का अखंड स्मरण करते रहे । बाद में उन्हें अक्षरधाम की प्राप्ति हुई ।

हमारे आगामी उत्सवों की यादी

आश्विन शुक्ल पक्ष-२/३ ता. २९-९-२०११ गुरुवार को बद्रिनाथ श्री स्वामिनारायण मंदिर का पाटोत्सव

आश्विन शुक्ल पक्ष-७ ता. ३-१०-२०११ सोमवार श्री सरस्वतीजी आवाहन महोत्सव, पूजन, अक्षर महोलवाडी श्री स्वामिनारायण संस्कृत महाविद्यालय जेतलपुर

आश्विन शुक्ल पक्ष-१० ता. ६-१०-२०११ गुरुवार विज्या दशमी दशहरा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का ३९ वाँ प्राकट्योत्सव मूली श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज के सानिध्य में तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की शुभ छाया में तथा पूजनीय संतो तथा हरिभक्तों की विशाल उपस्थिति में धूमधाम से मनाया जाएगा ।

आश्विन शुक्ल पक्ष-१५ ता. ११-१०-२०११ मंगलवार व्रत की कोजागरी, शरद पूर्णिमा

आश्विन शुक्ल पक्ष-१५ ता. १२-१०-२०११ बुधवार मुकुटोत्सव पुनम

आश्विन कृष्ण पक्ष-२ ता. १४-१०-२०११ शुक्रवार बावला मंदिर पाटोत्सव

आश्विन कृष्ण पक्ष-८ ता. २०-१०-२०११ गुरुवार को पुष्य नक्षत्र १०-४६ को लगेगा, तब चोपड़ा पूजन का ओर्डर लिया जाएगा । क्योंकि तब गुरुपुष्य योग होने के कारण नवीन वस्तुए खरीदने का शुभ योग १०-४६ को है ।

सत्संग समाचार

अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री कृष्ण जन्माष्टमी का उत्सव मनाया गया

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर अहमदाबाद में सावन कृष्ण पक्ष श्री कृष्ण जन्माष्टमी के शुभ दिवस पर प्रसादी के सभा मंडप में भावि आचार्य प.पू. लालजी १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रासदजी महाराजश्री तथा श्री सौम्यकुमार तथा श्री सुव्रतकुमार के शुभ उपस्थिति में संत-हरिभक्तों ने कृष्ण जन्मोत्सव पर कीर्तन-कथा का आयोजन किया था । गवैया संतो तथा गवैया हरिभक्तों ने कीर्तन भक्ति रात्रि में १२-०० बजे श्री नरनारायणदेव समक्ष श्री कृष्ण जन्मोत्सव की आरती प.पू. लालजी महाराजश्री के शुभ हाथों से धूमधाम से की गई । हवेली में भी प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री तथा पू. श्रीराजा के सानिध्य में श्री कृष्ण जन्मोत्सव मनाया गया । श्री नरनारायणदेव ओच्छव मंडले उत्सव करके भगवान को प्रसन्न किया । समग्र आयोजन पू. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी की प्रेरणा से पू. ब्र. राजेश्वरानंदजी तथा कोठारी जे.के. स्वामी तथा संत-मंडलने किया था । -मुनि स्वामी

श्री स्वामिनारायण मंदिर वड़नगर में भव्य झुलोत्सव दर्शन तथा जन्माष्टमी उत्सव मनाया गया

गुजरात की ऐतिहासिक तथा धार्मिक नगरी वड़नगर के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु. महंत शा. स्वा. नारायणवल्लभदासजी गुरु स्वामी हरिसेवादासजी की शुभ प्रेरणा से स.गु. पूजारी स्वामी विश्वप्रकाशदासजी ने बालस्वरुपश्री घनश्याम महाराज समक्ष आषाढ़ कृष्णपक्ष-२ से सावन कृष्णपक्ष-२ तक भिन्न-भिन्न प्रकार के सुंदर कलात्मक फूट, पंचमेवा, फूल, शब्जी आदि के भव्य झुलोत्सव सजाकर ठाकुरजी को झुलाया था । हरिभक्तों ने यजमान पद का लाभ लिया था । श्रीकृष्ण जन्मोत्सव रात्रि में १२ बजे धूमधाम से मनाया गया । शा. स्वामी विश्वप्रकाशदासजी ने सावन महिने में कथा का लाभ दिया था । हरिभक्तों ने दर्शन करके धन्यता का अनुभव किया ।

-स.गु.शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी

जेतलपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. महंत के.पी. स्वामी की प्रेरणा से मार्गदर्शन से श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज तथा बाल स्वरुप घनश्याम महाराज समक्ष आषाढ कृष्णपक्ष-२ से सावन कृष्णपक्ष-२ तक भिन्न-भिन्न प्रकार के झुलोत्सव बनाकर हरिभक्तों को दर्शन करवाया गया । सावन महिने में श्रीमद् भागवत् दशम स्कंधकी कथा स.गु. शा.स्वा. विश्वप्रकाशदासजी (कलोल नूतन मंदिर महंतश्री) ने करके हरिभक्तों को सुंदर लाभ दिया था । - महंत के.पी. स्वामी

कांकरिया श्री स्वामिनारायण मंदिर में महिला मंडल की कार्यरत सत्संग प्रवृति

प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री की आज्ञा से कांकरिया मंदिर महिला मंडल द्वारा घर घर सत्संग सभाका आयोजन होता है । अभी तक ७० से भी अधिक घरों में सभा हुई है । प्रथम सभा में धून-प्रार्थना, नंदसंतो के कीर्तन-भक्ति, संप्रदाय के शास्त्रों का वांचन, आरती-भोग करके सभा की पूर्णाहुति की जाती है । प्रत्ये हरिनवमी को जेतलपुर के सांख्ययोगी बहने कांकरिया मंदिर में सभा का लाभ लेने ५ बजे तक आती है ।- कांकरिया श्री नरनारायणदेव महिला मंडल

श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच-बापुनगर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा मंदिर के महंत स्वामी की प्रेरणा से सावन कृष्णपक्ष-७ के दिन समूह महापूजा था आयोजन किया गया इस प्रसंग पर प.पू. लालजी महाराजश्री संत मंडल के साथ पधारे थे । पूर्णाहुति के बाद समग्र सभा को दिव्य आशीर्वाद दिये। और कहा सर्वोपरि श्रीहरि को प्रसन्न करने के हेतु से ही हम ऐसे आयोजन करते हैं ।

भिन्न प्रकार के झुलोत्सव बनाकर ठाकुरजी को झुलाया गया । बहनों को दर्शन देने के लिए प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री पधारी थी । वहाँ से निकोल मंदिर में नए मुमुक्षु बहनों को गुरुमंत्र प्रदान किया था । श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के दिन मंदिर को रोशनी से सजाकर रात में १२-०० बजे श्री कृष्ण जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया गया । कोठारी स्वा. हरिकृष्णदासजी के मार्गदर्शन अनुसार झुलोत्सव में श्री कनुभाई वेकरीया तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की सेवा प्रेरणारुप थी ।

ता. २१-८-११ के रविवार को श्रीमती शा.ची.ला.म्यु.जन. होस्पिटल में सभी मरीजों को तथा बच्चो को फलो का वितरण किया गया। - गोरधनभाई सीतापरा

महादेवनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर में पंचदिनात्मक ज्ञानसत्र का आयोजन

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से महादेवनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर जडेश्वरपार्क में पवित्र सावन महिने में ता. ३१-७-२०११ से ता. ४-८-२०११ तक पंच दिनात्मक ज्ञानसत्र स.गु. शा. स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वरप गुरुकुल) के व्यासासन पर आयोजित किया गया। रोज रात्रि में झुलोत्सव के बाद ९-१५ से १०-३० तक कथामृत का पान किया जाता। जिसके मुख्य अंश निम्न अनुसार है।

- सत्संग में महाराजने सुख दिया है। दुःख तो हमने खड़े किये।
- जिसका संबंधभगवान के साथ है वह पामर जीव नहीं होता।
- काल पर भगवान के भक्त की जाति है। गोलीड़ा गाँव के राणा राघव वशराम भीमा राजगर की कथा सुनने लायक है।
- भगवान के भक्तों को परस्पर प्रेम भाव होना चाहिए। पंचाला के दरबार झीणाभाई ने हरिभक्तो के नाते मंगरोल के हरिभक्त कमल काशी भाई की सेवा की थी।
- प्रभु की जो आज्ञा है वह मेरे सुख के लिए है। इस कारण सदैव प्रभु की आज्ञा में रहना चाहिए।
- भगवान अपने भक्त की लाज रखते हैं। हम जगत को नहीं भगवान से धोका करते हैं।
- जब भगवान दुःख में रक्षा करते हैं तो भगवान की कृपा कहते है। लेकिन सुख में भगवान की कृपा नही मानी जाती।
- भक्त अपनी आजीविका में से भगवान को हिस्सा देते हैं। भगवान जैसे समर्थ भागीदार मिले तो उसमें हिचकिचाना नहीं चाहिए।
- समय निकाल कर श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री स्वामिनारायण भगवान की प्रसादी की वस्तुओं का दर्शन परिवार सहित करना चाहिए।

पांच दिन के ज्ञान सत्र में दूसरे दिन रतनपुरा गुरुकुल से आनंद स्वामी तथा चौथे दिन पू. छोटे पी.पी. स्वामीने भी सुंदर लाभ देकर प्रोत्साहित किया था।

- नटवरभाई पटेल, महादेवनगर

श्री स्वामिनारायण मंदिर बालासिनोर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा समस्त धर्मकुल परिवार की आज्ञा से तथा शा. स्वा. विश्वस्वरुपदासजी तथा पा. रमेश भगत की प्रेरणा से श्री स्वामिनरायण मंदिर बालासिनोर में प.भ. ईश्वरभाई वैद्य के यजमान पद पर "श्रीमद् सत्संगिभूषण कथा पारायण" संप्रदाय के विद्वान संत पू.शा.स्वा. निर्गुणदासजी के वक्तापद पर सम्पन्न हुई।

इस शुभ प्रसंग पर अहमदाबाद से प.पू. बड़े महाराजश्री पधारे थे। मंदिर में ठाकुरजी की आरती उतार कर सभा में पधारे। बहनों को आशीर्वाद देने प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री पधारी थी। इस प्रसंग पर पा. नरेन्द्र भगतने सुंदर सेवा की। - का. हिरेन जे.

कला भगत के कुंडला (ता. कड़ी) गांव में श्रीमद् सत्संगिभूषण पारायण का आयोजन

प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से कला भगत के कुंडला गाँव में ता. २१-७-२०११ से ता. २५-७-२०११ तक श्रीमद् सत्संगिभूषण पंचान्ह पारायण श्रीमती उषाबहन संदिपभाई पटेल के यजमान पद पर सां. गीताबहन (विरमगाँव) ने कथामृत का पान करवाया । ता. २२ को प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री पधारी । ता. २३ को प.पू. बड़ी गादीवालाश्री पधारी थी। उस प्रसंग पर सांख्ययोगी बहनें भी पधारी थी। - क्रिष्णा राजपूत

उवारसद मंदिर में होमात्मक महापूजा

सर्वोपरि श्रीहरि की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा पू. संतो की प्रेरणा से उवारसद श्री स्वामिनारायण मंदिर में पवित्र सावन महिने में कथा करने पधारे। संत पू. पुराणी स्वामी विश्वविहारीदासजी (भुजवाले) तथा पुराणी स्वामी धर्मजीवनदासजीने सावन कृष्ण पक्ष एकादशी ता. २५-८-२०११ को भव्य महापूजा का आयोजन किया गया। संतोने श्रद्धापूर्वक महापूजा करवाई । पु. पुराणी स्वामी विश्वविहारीदासने (भुजवाले) पवित्र सावन महिने में भगवान के अद्‌भुत चरित्रों की कथा की।

-कोठारी बाबुभाई बोधाभाई पटेल

श्री स्वामिनारायण मंदिर विरमगाँव

प.पू.अ.सौ. गादीवालश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से श्री नरनारायणदेव के श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनों का) में इस सावन कृष्ण पक्ष-२ तक भिन्न प्रकार के झुलोत्सव बनाकर भगवान को झुलाया था । झुलोत्सव प्रसंग पर स.गु.शा.स्वा.

श्रीजीप्रकाशदासजी (नारणपुरा मंदिर महंतश्री) संत मंडल के साथ पधारे थे। - राजुभाई ठक्कर

श्री स्वामिनारायण मंदिर माणसा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञ-आशीर्वाद से तथा महंत साधु घनश्यामप्रकाशदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री राधाकृष्णदेव, हरिकृष्ण महाराज को सावन महिने में भिन्न भिन्न झुलोत्सव से सजाकर भक्तों को दर्शन करवाये। सावन महिने की कथा शा. घनश्याम स्वामी तथा शा. चंद्रप्रकाशदास के वक्तापद पर सम्पन्न हुई । श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की सेवा प्रेरणारुप थी।

- भावन पटेल

मूली प्रदेश का सत्संग समाचार

हलवद खारीवाड में प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री की पधरामणी

मूली के हलवद के खारीवाड में प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से सांख्ययोगी नीताबहन तथा सां. मधुबहन की प्रेरणा से सत्संग सभा का आयोजन किया गया। इस प्रसंग पर अहमदाबाद से प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री सांख्ययोगी बहनो के मंडल के साथ पधारी थी । सभा में उपस्थित सांख्ययोगी बहनोंने मूल संप्रदाय, श्री नरनारायणदेव की गद्दी, श्री राधाकृष्णदेव के प्रति निष्ठा तथा भगवान तथा धर्मकुल का माहात्म्य बताया। - मधु बहन

श्री स्वामिनारायण मंदिर लींबडी

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वाद से बालस्वरुप श्री घनश्याम महाराज के सानिध्य में सावन महिने में होमात्मक महापूजा सां. चंद्रिकाबहन के मार्गदर्शन से सम्पन्न हुई। ७० जितने भाविकोने लाभ लिया । साधु भक्तवत्सलदास तथा वंदनप्रकाशदासने व्यवस्था की। - श्रीजी महिला मंडल

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर इटास्का शिकागो का १३ वाँ पाटोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री एवं समस्त धर्मकुल की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा यहां के महंत स.गु.शा.स्वामी धर्मवल्लभदासजी की प्रेरणा से तथा पूजारी हरिनंदन स्वामी तथा पूजारी हरिवल्लभदासजी स्वामी के मार्गदर्शन से श्री नरनारायणदेव पीठस्थान संचालित आई.एस.एस.ओ. इटास्का शिकागो श्री स्वामिनारायण मंदिर में बिराजमान श्री राधाकृष्ण देव हरिकृष्ण महाराज का १३ वाँ पाटोत्सव ३१ जुलाई को रविवार को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ हाथों से मनाया गया।

इस प्रसंग के उपलक्ष में ता. २३-७-२०११ शनिवार को १३ घंटे की अखंड धून का आयोजन किया गया। जिस में २ घंटे तक बहनों ने धून की। ता. २४-७-२०११ से ता. ३०-७-२०११ तक श्रीमद् सत्संगिजीवन सप्ताह पारायण शा.स्वा. व्रजवल्लभदास के वक्ता पद पर तथा प.भ. रितेषभाई, ठाकोरभाई, विक्रमभाई तथा जसुभाई के यजमान पद पर सम्पन्न हुआ।

श्रीहरियाग, समूह आदिनारायण महापूजा, अभिषेक, महा अन्नकूट, सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा ब्लड डोनेशन का आयोजन किया गया।

३१ जुलाई की सुबह ८-०० बजे प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के वरद् हाथों से ठाकुरजी का षोडशोपचार महाभिषेक विधिपूर्वक सम्पन्न हुआ। अभिषेक के बाद शिंगार आरती, अन्नकूट आरती की गई। महाभिषेक के यजमान प.भ. प्रणवभाई तथा अ.नि. डॉ. दिनेशभाई तेवार परिवार बने थे।

अन्नकूट के यजमान प.भ. विष्णुभाई (डांगरवा) तथा प.भ. शामलदास बने थे।

श्रीहरिकृष्ण महाराज के भव्य झुलोत्सव में पू. स्वा. हरिवल्लभदासजीने चंदन के भिन्न रुपों के साथ दर्शन करवाये थे।

२९ जुलाई को श्री नरनारायणदेव युवक मंडलने स्पेश्यल केक बनाकर सत्संग के प्राण प्यारे प.पू. लालजी १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का १४ वाँ प्राकट्योत्सव विधिपूर्वक मनाया। श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की इस वर्ष की शिबिर ''मंदिर हमारा घर'' की लीड़रशीप प.पू. लालजी महाराजने संभाली थी । जिसकी विडीओं क्लीप उनके जन्म दिवस पर दिखाई गई।

इस महोत्सव में जेतलपुर से पू. शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी तथा क्लिवलेन्ड तथा डिट्रोईट से संत गण पधारे थे। न्युजर्सी से पू. बिन्दुराजा भी पधारी थी।

यह महोत्सव श्रीहरिकृष्ण तथा धर्मवंशी के आशीर्वाद से परिपूर्ण हुआ। - वसंत त्रिवेदी

पारसीपनी न्युजर्सी नूतन मंदिर में शिलान्यास विधि

सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान की असीम कृपा से आई.एस.एस.ओ. संस्था द्वारा पारसीपनी न्युजर्सी में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के वरद् हाथों से शिलान्यास विधिता. ७-८-११ को रविवार को धूमधाम से हुआ। इस प्रसंग पर डॉ. सुधीरभाई परीख विशेष रुप से उपस्थित थे।

सुबह १० बजे प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री संतगण के साथ पधारे तब उनका स्वागत कुमकुम, अक्षत तथा फुल हार से किया गया। सभा संचालन जेतलपुर मंदिर के महंत स.गु. शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजीने किया । इस प्रसंग के यजमानश्री ठाकोरभाई पटेल, गौरश्री पिनाकीनभाई जानीने शास्त्रोक्त विधिसे ईंटो की पूजा करके प्रथम पांच ईंटो को पू. महाराजश्रीके वरद् हाथों से रखवाई।

सभा में यजमान हरिभक्तों प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा संतो का फुलहार से स्वागत पूजन किया। विहोकन मंदिर के शा. माधवप्रसाददासजी तथा चेरीहिल मंदिर के महंत शा. अभिषेकप्रसाददासजीने प्रासंगिक प्रवचन किया था । डॉ. सुधीरभाई परीखने अपने प्रवचन में मंदिर के भविष्य के उपयोग हेतु तथा एन.आर.आई. के लिए अमेरिकन सरकार के नियमों की चर्चा की थी।

अंत में प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री छपैया श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव तथा अमेरिका में प्रथम निर्माण हुए श्री स्वामिनारायण मंदिर विहोकन की सिल्वर ज्युबीली २५ वाँ भव्य पाटोत्सव २०१२ में एक साथ मनाने का शुभ संकल्प घोषित किया था।

प.भ. प्रहलादभाई पटेलने आभार व्यक्त किया था । तथा सभी दानवीर हरिभक्तों के नाम घोषित करके प.पू. महाराजश्री के वरद् हाथों से **"Appriciation Certificate"** प्राप्त करवाकर सभीने नीव में ईट रखकर मंदिर नव निर्माण का शुभ संकल्प किया था। अंत में ठाकुरजी की आरती के बाद सभीने प्रसाद लिया था। - दिप्तीबहन जानी

श्री स्वामिनारायण मंदिर ह्युस्टन टेकसास

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा महंत के.पी. स्वामी की प्रेरणा से ता. ७-८-११ से ता. १३-८-११ तक श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण शास्त्री स्वामी व्रजवल्लभदासजी के वक्तापद सम्पन्न हुई। हरिभक्तों ने बड़ी संख्या में कथामृत का लाभ लिया था। पारायण के मुख्य यजमान पद पर पटेल सुरेशभाई तथा सरोजबहन कृष्ण जन्मोत्सव के यजमान पारेख बिमलभाई तथा कीर्तिबहन रुक्ष्मणी विवाह में कन्या पक्ष के यजमान चतुर्वेदी अनुपभाई तथा रीटुबहन वरपक्ष के यजमान पटेल देवेन्द्रभाई तथा कोकीलाबहन ने लाभ लिया था। समग्र प्रसंग में युवक, युवती तथा महिला मंडल की सेवा प्रेरणारुप थी। - रमेशभाई पटेल

पियोरिया आई.एस.एस.ओ. चेप्टर अमेरिका में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की पधरामणी

श्री नरनारायणदवे पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से आई.एस.एस.ओ. संस्था का नूतन चेप्टर पियोरिया में हर रविवार को सत्संग सभा का आयोजन होता है।

ता. १-८-११ का दिन धन्य था । श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने पधारकर लोगों को आश्चर्य चकित कर दिया था। अति व्यस्त होने पर भी प.पू. महाराजश्रीने समय निकाला था । प्रत्येक के घर जाकर पधरामणी करके आशीर्वाद दिये । हरिमंदिर के लिए प.भ. नविनभाई सिंहासन बनाया था। जिस में ठाकुरजी को बिराजमान करके आरती उतारी थी। जिस प्रकार जेतलपुर की गंगामां महाराज को गरम गरम भोग बनाकर खिलाती थी। उसी प्रकार यहाँ के धर्मकुल प्रेमी बहनों ने श्रद्धा भक्ति तथा प्रेमपूर्वक भोग बनाकर प.पू. महाराजश्री संतो-पार्षदो को भावपूर्वक भोजन करवाया था।

यहाँ के हरिभक्त अपनी भावि पेढी को बाल मंडल द्वारा तैयार कर रहे है। - रमेश पटेल

आई.एस.एस.ओ. विशिंग्टन डी.सी. चेप्टर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की पधरामणी

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से २५ जून शनिवार शाम को ४-३० से ९-३० तक सत्संग सभा का आयोजन किया गया था। इस प्रसंग पर अहमदाबाद से हमारे प्राण प्यारे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, पू. पी.पी. स्वामी (जेतलपुर) तथा माधव स्वामी तथा पार्षद वनराज भगत

(न्युजर्सी) शाम को ६ बजे पधारे थे । प्रारंभ में धून-भजन, कीर्तन तथा संतो की प्रेरक अमृतवाणी के बाद प.पू. महाराजश्री ने प्रसन्न होकर शीध्र ही मंदिर निर्माण कार्य सम्पन्न हो ऐसी प्रार्थना की । उसके बाद प.पू. महाराजश्रीने ठाकुरजी की आरती की । संतो-हरिभक्तोने प.पू. महाराजश्री के चरण स्पर्श करके दर्शन किए ।

२६ जून रविवार साम ६ से १० सत्संग सभा में पू. पी.पी. स्वामी तथा शा.स्वा. माधवप्रसाददासजी पधारे थे। कथा वार्ता का सुन्दर लाभ दिया । रात में ८ बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे । रविवार दोपहर में वोशिंग्टन डी.सी. में शीध्र मंदिर निर्माण कार्य सम्पन्न हो इस हेतु से इल्करीझ में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री को एक बिल्डींग बताया गया था । प.पू. महाराजश्रीने पसंद किया था । प.पू. महाराजश्रीने आरती उतारकर सभी को आशीर्वाद दिये थे ।

ता. २७ तथा २८ को मेरीलेन्ड तथा वर्जीनिया में कई हरिभक्त के घर प.पू. महाराजश्रीने संत-पार्षदों के साथ पधरामणी की थी । २९ तारीख को हरिभक्तों से विदा लेकर प.पू. महाराजश्री टोरन्टो पधारे थे ।

८ जुलाई शुक्रवार शाम को ७ से १० तीन घंटे इल्करीझ के होल में सभा हुई । जिस में महामंत्र धून, ''आज मारे ओरड़े'' तथा कीर्तन भक्ति की गई । रात में ८-१० घंटे पू. शा. स्वामी (कोटेश्वर गुरुकुल) तथा शा. व्रज स्वामी (कलिवलेन्ड मंदिर के महंत) पधारे थे । दोनों संतो का पुष्पहार से स्वागत किया गया था । संतो ने अपनी अमृतवाणी में मंदिर निर्माण कार्य शीघ्र सम्पन्न होने हेतु भगवान से प्रार्थना की ।

१७ जुलाई शनिवार शाम को ५ से ९-३० तक सभा की गई । जिसमें धून-भजन, कीर्तन, कथावार्ता की गई । कोलोनिया मंदिर से पू. ज्ञान स्वामीने गुरु पूर्णिमा के अवसर पर कथामृत वाणी का लाभ (ईन्टरनेट लाईव ब्रोडकास्ट) दिया था । सभा में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तस्वीर का पूजन-अर्चन करके ठाकुरजी की आरती करके सभी ने प्रसाद ग्रहण किया था ।

- कनुभाई पटेल

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया में ४ जुलाई रविवार को ट्राय स्टेट एरीया द्वारा सत्संग सभा का आयोजन किया गया । जिस में चेरीहील, पारसीपेनी, न्युयोर्क, विहोकन, कोलोनीया, एडीसन, एटलान्टा, फिलाडेल्फीया, पेन्सीलवेनीया तथा मेरीलेन्ड के युवानों, बच्चों तथा बुजुर्गोने भाग लिया था ।

इस प्रसंग पर जेतलपुर से पधारे हुए पू. महंत शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी, चेरीहील मंदिर के महंत शा. स्वा. अभिषेकप्रसाददासजी, विहोकन मंदिर के महंत शा. माधव स्वामी तथा कोलोनीया मंदिर के महंत शा.स्वा. ज्ञानजीवनदासजी ने कथा वार्ता करके भगवान का तथा धर्मकुल का माहात्म्य सुनाया था ।

पू. आत्मप्रकाशदासजी स्वामीने कहा कि परस्पर एकजुट भावना से स्नेह बढ़ता है । महाराजने कहा है कि प्रत्येक सत्संगी के हृदय में भगवान बसे हुए है । इसीलिये ऐसी ही भावना रखनी चाहिये । सभी ने भोग-आरती तथा प्रसाद का लाभ लिया ।

१६ जुलाई शनिवार को गुरु पूर्णिमा धूमधाम से मनाया गया । धून, कीर्तन के बाद प.पू. महाराजश्री की तस्वीर का पूजन किया गया ।

पू. महंत शा. ज्ञानजीवनदासजीने गुरु पूर्णिमा का माहात्म्य कहते हुए कहा की, सर्वोपरि भगवान श्री स्वामिनारायण भगवान के अपर स्वरुप समान हमारे आचार्य महाराजश्री का पूजन ही यथार्थ रुप से गुरु पूजन है । हमारे सभी के धर्मगुरु भी वे ही है । उनके द्वारा गुरु मंत्र लेकर हम आश्रित हुए है । इस कारण यह हमारा कर्तव्य है कि हमें उनकी आज्ञा में रहना चाहिए ।

३ जुलाई, शनिवार को सुंदर सभा का आयोजन किया गया। जिस में धून, कीर्तन, कथा-वार्ता की गई । जेतलपुर पू. महंत शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजीने आशीर्वाद देते हुए कहा कि, मंदिर का नव निर्माण होगा तब सभी हरिभक्तो को तन, मन तथा धन से सेवा करनी है । पारसीपेनी न्युजर्सी के छपैया के नूतन मंदिर में सभी को सेवा करनी है । प.पू. महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री को प्रसन्न करना है ।

कोलोनीया मंदिर के महंत शा.स्वा. ज्ञानजीवनदासने भी आशीर्वाद देते हुए कहा कि यहा पवित्र तथा प्रगट देव की मूर्तिओं को स्थापित किया जाएगा । जिसका लाभ अवश्य लेना चाहिए । शाम को भोग-आरती के बाद जनमंगल पाठ करके सभी ने प्रसाद ग्रहण किया था ।

- प्रविण शाह

श्री स्वामिनारायण मंदिर स्ट्रेधाम (यु.के.)

श्री स्वामिनारायण मंदिर स्ट्रेधाम में सर्वोपरि श्रीहरि की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े

महाराजश्री के आशीर्वाद से ता. २६-६-२०११ रविवार को महापूजा का सुंदर आयोजन किया गया था । जिस में अहमदाबाद मंदिर के संत स्वामी सुखनंदनदास तथा स्वामी विजयप्रकाशदासने विधिपूर्वक महापूजा करवाई । जिस के मुख्य यजमान प.भ. निलेशभाई सोनी परिवार, समीर चंदुलाल गढीया तथा श्री अश्विनभाई सोनी बने थे । महापूजा में कई हरिभक्तों ने लाभ लिया । प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की कृपा से सुंदर सत्संग प्रवृति चल रही है।

- अजयभाई पटेल

श्री स्वामिनारायण मंदिर लेस्टर (यु.के.)

लेस्टर श्री स्वामिनारायण मंदिर का ७ वाँ पाटोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से ता. १४-८-२०११ को धूमधाम से मनाया गया।

इस शुभ प्रसंग पर ता. ८-८-२०११ से १४-८-२०११ तक श्रीमद् सत्संगिभूषण सप्ताह पारायण शास्त्री घनश्यामप्रकाशदासजीने किया था । ता. १४-८-२०११ रविवार को प्रात) ८-०० बजे श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद हाथों अभिषेक-अन्नकूट आरती की गयी थी । इस प्रसंग पर देव, आचार्यश्री का दर्शन करने के लिये लंडन, क्रोली, स्ट्रेधाम इत्यादि शहरों से हरिभक्त पधारे थे । सभी को पू. महाराजश्री ने हार्दिक आशीर्वाद दिया था । समग्र प्रसंग पर युवाकार्यकरों की तथा लेस्टर मंदिर की भक्ति महिला मंडल की बहनों की सेवा सराहनी थी । इस प्रसंग पर सांस्कृतिक कार्यक्रम किया गया था ।

प.पू. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री के कृपा से सत्संग की सुन्दर प्रवृति चल रही है।

अक्षरनिवासी संत-हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजलि

अहमदाबाद : प.भ. वाड़ीभाई अंबालाल पटेल (जेतलपुर) ता. २०-८-२०११ को श्रीजी महाराज का स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं।

वड़नगर : अग्रगण्य सेवाभावी निष्ठावान प.भ. कोठारी गणपतलाल मुलचंददास भावसार सावन शुक्ल पक्ष-११ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं।

अंबापुर (जि. गांधीनगर) : प.भ. मफतभाई विठ्ठलभाई पटेल ता. ३०-७-२०११ के दिन श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं।

अहमदाबाद (मूल गाँव मोरबी) : प.भ. सोनी रसिकभाई जमनादास पारेख ता. ७-८-२०११ को श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं।

गवाडा (ता. विजापुर) : प.भ. गोपालभाई वालजीदास (भुज) ता. २५-७-२०११ को श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं।

अहमदाबाद : प.भ. वलवंतसिंह भारतसिंह चावडा ता. १५-८-२०११ को श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं।

मोम्बासा : श्री नरनारायणदेव के अनन्य निष्ठावान तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के कृपापात्र प.भ. करशनभाई प्रेमजी भुड़ीया (आ. सुखपर (कच्छ) वाले) (उ. ८५ वर्ष) ता. ३-८-२०११ को श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं।

वडु (ता. कडी) : प.भ. विष्णु भगत के पू. पिताश्री प.भ. अंबालाल शिवदास पटेल सावन कृष्ण पक्ष-८ श्री कृष्ण जन्माष्टमी को ता. २२-८-२०११ को श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्री स्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

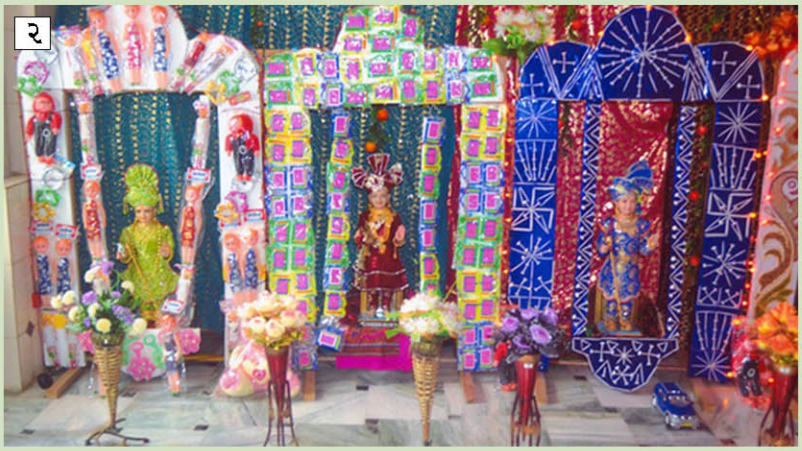

(૧) માણસા મંદિરમાં હિંડોળા દર્શન (૨) ધ્રાંગધ્રા બહેનોના મંદિરમાં (ઘાંચીવાડ) હિંડોળા દર્શન. (૩) જેતલપુરધામ મંદિરમાં જન્માષ્ટમીનાં બાલસ્વરૂપ ઘનશ્યામ મહારાજ સમક્ષ રાસ રમતા હરિભક્તો અને સાથે મહંત સ્વામી આત્મપ્રકાશદાસજી અને હરિઓમ સ્વામી (૪) વિરમગામ મંદિરમાં (બહેનોનું) હિંડોળા પ્રસંગે આરતી ઉતારતા શ્રીજી સ્વામી. (૫) ઉવારસદ મંદિરમાં મહાપૂજા વિધિ કરાવતા શા.સ્વામી વિશ્વવિહારીદાસજી ગુરુ મહંત શા.હરિકૃષ્ણદાસજી. (૬) ડિટ્રોઈટ મંદિરમા શ્રીકૃષ્ણ જન્મોત્સવની આરતી ઉતારતા શા.બ્રહ્મવિહારીસ્વામી અને કીર્તન ભક્તિ કરતા હરિભક્તો.

Registered under RNI-GUJGUJ/2007/20221"Permitted to post at
Ahd PSO on 11th every month under postal REG. NO. GAMC.-003/9-11 issued SSP Ahd Valid
up to 31-12-2011 Licenced to Post without pre payment No. CPMG/GJ/01/07-08 valid up to 31/12/2011

(૧) બોસ્ટન મંદિરમાં પાટોત્સવ પ્રસંગે આરતી ઉતારતા પ.પૂ. મહારાજશ્રી અને કથા કરતાં પૂ.પી.પી.સ્વામી (જેતલપુર)(૨)શિકાગો મંદિરમાં પાટોત્સવ - અભિષેક કરતા અને સભામાં આશીર્વાદ આપતા પ.પૂ. મહારાજશ્રી સાથે વક્તા શા. વ્રજવલ્લભદાસજી અને પૂ.પી.પી.સ્વામી (૩) એટલાન્ટા જયોર્જીયા નૂતન મંદિરમાં પ્રાણ પ્રતિષ્ઠા કરતા - અન્નકૂટ આરતી ઉતારતા અને શોભાયાત્રામાં દર્શન આપતા પ.પૂ. મહારાજશ્રી (૪) પારસીપની મંદિરની શિલાન્યાસ વિધિ કરતા પ.પૂ. મહારાજશ્રી અને સભામાં ઉદ્‌બોધન કરતા ડો. સુધીરભાઈ

Jagdish offset